रेत और झाग

खलील जिब्रान की
अमूल्य सूक्तियों का संचयन



खलील जिब्रान

हिंदी: भाईदयाल जैन

रेत और झाग

[जिब्रान की अमूल्य सूक्तियों तथा मान्यताओं का संचयन]

खलील जिब्रान



राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट
दिल्ली-६.

अनुवादक
भाईदयाल जैन

प्रथम संस्करण
नवम्बर, १९५६

मूल्य
दो रुपया

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल
दिल्ली.

रेत और झाग

मान्यताएं

इस पुस्तक की कहानी

खलील जिब्रान हिन्दी-जगत के लिए कोई अपरिचित विचारक, कवि और मनीषी नहीं हैं, उनकी कई पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। फिर भी उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय अलग दे दिया गया है। इस भूमिका में प्रस्तुत पुस्तक 'रेत और झाग' के रचे जाने की रोचक कहानी और समालोचकों की दृष्टि में इस पुस्तक का महत्व दिया जा रहा है, जो बिल्कुल नई बात है।

खलील जिब्रान की सैक्रेटरी श्रीमती बारबैरा यंग ने एक बार कवि से उनकी जीवनी या उनके प्रति श्रद्धांजलि लिखने की आज्ञा मांगी। जिब्रान ने आ..ा देते हुए कहा, "यदि मैं आज रात को मर जाऊं, तो यह बात याद रखना···।" कवि को कोई कहानी या कुछ बात कहने से पहले भूमिका-रूप से एक-दो वाक्य सूत्र या सूक्ति के ढंग से कहने की आदत थी। और वे सूक्तियां, सुभाषित या कहावतें कागज के टुकड़ों, थियेटरों के कार्यक्रम के कागजों, सिगरेट की डिब्बियों के गत्तों, तथा फटे हुए लिफाफों पर लिखी हुई होती थीं, जिन्हें श्रीमती बारबैरा यंग इकट्ठी करने लगी। और तब कवि उससे कहते, "अच्छा, तुम अपने काम में लगी हो, रेत और झाग को मूर्खता से इकट्ठा कर रही हो?" जिब्रान कभी-कभी अपनी सैक्रेटरी के द्वारा इन परचियों को इकट्ठा करने के काम का मजाक करते हुए कहा करते थे, "ये तो केवल रेत और झाग ही होंगे।" इस सूक्ति-संग्रह का यही नाम रखा गया। और तब से ही जिब्रान

ने इस संग्रह की तैयारी में दिलचस्पी लेनी आरम्भ कर दी। वह इस काम में खूब आनन्द लेने लगे और फिर नई-नई कहावतें बनाने लगे। इनमें से कुछ सूक्तियां जिब्रान की पहले कही या लिखी हुई प्रभावशाली सूक्तियों की टक्कर की हैं। एक दिन जिब्रान ने कहा, "कृपा करके यह लिखिए-- और याद रखिए कि यह पुस्तक की अन्तिम कहावत होनी चाहिए--- जिन विचारों को मैंने इन सूक्तियों में बन्द किया है, मुझे अपने कामों द्वारा उनको स्वतन्त्र करना है।" 'रेत और झाग' की यही अन्तिम सूक्ति है, और इससे प्रकट होता है कि कवि अपनी कथनी को करनी में लाने के कितने इच्छुक थे। इसी प्रकार कवि ने इस पुस्तक की पहली सूक्ति भी स्वयं विशेष रूप से लिखाई थी।

जब खलील जिब्रान को टाइप हुई पांडुलिपि दिखाई गई, तो उन्होंने देखकर विस्मयपूर्ण आकृति से पूछा, "क्या सचमुच मैंने ही यह सब कुछ रचा है या तुमने इन्हें बनाने में मेरी सहायता की है?" बारबैरा यंग ने उत्तर दिया, "मेरा एक भी शब्द नहीं है। और आप इसे जानते हैं। इन पंक्तियों में से हर एक पंक्ति जिब्रान है, वे और कोई नहीं हो सकतीं।"

टाइपलिपि प्रकाशक को दे दी गई और वह सन् १९२६ में प्रकाशित हुई। जिब्रान सदा इस पुस्तक को 'कहावतों की पुस्तिका' कहा करते थे।

श्रीमती बारबैरा यंग और दूसरे व्यक्तियों का मत है, "अंग्रेजी में इस पुस्तक के समान कहावतों की और दूसरी पुस्तक नहीं है। इस पुस्तक में ऊंचाई, गहराई और विशालता के ही तीन परिमाण (Three Dimensions) नहीं हैं, इसमें चौथा परिमाण समयहीनता (Timelessness) भी है, जो कि अनन्त या असीम का ही दूसरा नाम है।"

कवि की कुछ सूक्तियां देखिए---

सत्य को जानना तो सदा चाहिए, पर उसको कहना कभी-कभी चाहिए।

◇ ◇ ◇

सत्य को सुननेवाला सत्य बोलनेवाले से कुछ कम नहीं है।

◇ ◇ ◇

बहुत-से मत-मतान्तर खिड़की के शीशों के सदृश हैं। हम उनमें से सत्य को देखते तो हैं, पर वे हमें सत्य से अलग ही रखते हैं।

◇ ◇ ◇

जब तुम सूर्य की ओर पीठ फेर लेते हो, तब तुम अपनी परछाईं के सिवा और क्या देख सकते हो ?

◇ ◇ ◇

दानशीलता यह नहीं है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता मुझे तुमसे अधिक है, वरन् यह है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता तुम्हें मुझसे अधिक है।

◇ ◇ ◇

जो आदमी भलाई को बुराई से अलग करनेवाली रेखा पर अंगुली रख सकता है, निस्सन्देह वही आदमी परमात्मा के चरणों को छू सकता है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम्हारे हृदय में ज्वालामुखी धधक रहा है, तो तुम अपने हाथों में फूलों के खिलने की आशा कैसे कर सकते हो ?

◇ ◇ ◇

कवि की अपराध की परिभाषा देखिए—

अपराध क्या है ? या तो वह आवश्यकता का दूसरा नाम है या किसी बुराई का लक्षण।

बदले हुए युग में निर्धनों के महत्व को बताते हुए जिब्रान कहते हैं—

प्राचीन काल में गुणी लोग राजाओं की सेवा करने में गौरव अनुभव करते थे।

पर आज वे निर्धनों की सेवा करने में सम्मान का दावा करते है।

ऐसी ही सुन्दर तथा अनमोल कहावतों से यह पुस्तक भरी पड़ी है। ये मोती और हीरों से भी अधिक मूल्यवान हैं। ये गांठ में बाधकर रखने योग्य हैं, जिससे समय पर काम आएं। इनमें उस विचारक के विचार हैं, जिसने जीवन की नाड़ी पर हाथ रखा है, और जिसने जीवन की थाली से खाना और प्याले से पानी पीया है, न कि उस आदमी के विचार हैं, जिसने जीवन को केवल देखा है और उसकी आलोचना की है। बारबैरा यंग के शब्दों में "जिब्रान ने इनमें वही काम किया है, जो कि उसने 'प्राफट' में किया था। जीवन और मृत्यु के बीच की बातों को हमें दिखाया है, पर इनके ढंग जरा भिन्न हैं।"

जिब्रान की इस श्रेष्ठ कृति का अनुवाद मैंने तेरह नवम्बर सन '४९ को दूसरी पुस्तकों के अनुवाद के साथ-साथ ही आरम्भ किया और पन्द्रह अक्तूबर सन १९५० को पूरा किया। इसके प्रकाशित होने पर मुझे खेद भी है और हर्ष भी। खेद इसलिए कि हिन्दी में छोटी से छोटी श्रेष्ठ कृति को भी प्रकाशित होने में इतना समय लगता है। और हर्ष इसलिए कि हिन्दी में गुण-ग्राहकता की कमी नहीं है। इस खेद और हर्ष के मेल का नाम ही जीवन है।

दिल्ली
एक अगस्त, '५६।

माईदयाल जैन



Khalil Gibran

खलील जिब्रान : परिचय

संसार के महाकवियों की नामावलि में महाकवि खलील जिब्रान का नाम एक नई वृद्धि है। यद्यपि यह विश्व-विख्यात और अन्तर्राष्ट्रीय कवि थे, तो भी चूंकि इन्होंने एशिया के लेबनान देश को अपने जन्म से पवित्र किया था, इस नाते हम भारतवासी भी इन पर उचित गर्व कर सकते हैं।

इनका जन्म ६ जनवरी, १८८३ ई० को लेबनान के बशरी नगर में एक सम्पन्न और नामी ईसाई घर में हुआ था। इनकी मां का नाम कलीमा रहीमी था।

बारह वर्ष की छोटी आयु में ही इन्हें अपने माता-पिता के साथ बेल्जियम, फ्रान्स और सयुंक्त राज्य अमरीका आदि देशों में भ्रमण करना पड़ा, जिससे इनका ज्ञान और अनुभव बहुत बढ़ गया। यह अरबी, अंगरेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के बड़े विद्वान् थे और पहली दो भाषाओं पर तो इनको इतना अधिकार प्राप्त था कि इनकी समस्त रचनाएं इन्हीं भाषाओं में हैं। यह कवि, दार्शनिक और चित्रकार थे। अपनी रचनाओं और उग्र आलोचनाओं के कारण इनको अपने देश के पादरियों, जागीरदारों और अधिकारी वर्ग का कोप-भाजन बनना पड़ा, जिन्होंने इनको न केवल जाति से ही बहिष्कृत किया, बल्कि देश से भी निकाल दिया। फिर वह १९१२ ई० से संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क नगर में स्थायी रूप से रहने लगे।

खलील जिब्रान अद्‌भुत कल्पना-शक्ति रखते थे। और वह भारत के विश्वविख्यात महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की तुलना के थे। इन्होंने बारह वर्ष की अल्प आयु में ही अरबी में लिखना आरम्भ कर दिया था। इन्होंने लगभग पच्चीस पुस्तकें लिखीं, जो इनके अपने ही बनाए हुए चित्रों से सुसज्जित हैं। इनका संसार की बीस-बाईस प्रसिद्ध भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इससे उनके प्रशंसकों और पाठकों की संख्या का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। भारतवर्ष में हिन्दी, गुजराती, उर्दू और मराठी में उनकी बहुत-सी पुस्तकों का अनुवाद हो चुका है। यहां यह उल्लेखनीय है, कि उर्दू और मराठी में खलील जिब्रान की रचनाओं के सबसे अधिक अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। पर यह सन्तोष की बात है, कि हिन्दी-जगत में भी खलील जिब्रान बहुत प्रिय बन गये हैं। उनकी कई पुस्तकों के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

खलील जिब्रान एक महान् चित्रकार भी थे। और उनके चित्रों की संयुक्त राज्य अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस में कई प्रदर्शनियां हुईं, जिन-में प्रदर्शित चित्रों की नामी चित्र-आलोचकों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी।

यह ईसाई धर्म के अनुयायी थे, पर पादरियों और अंधविश्वासों के सदा कट्टर विरोधी रहे। यह महान् देशभक्त थे और अपने देशवासियों से इतने सताए जाने पर भी अपने देश के लिए सदा कुछ न कुछ लिखते रहे। अड़तालीस वर्ष की आयु में एक मोटर दुर्घटना में ये सख्त घायल हो गए और १० अप्रैल, सन् १९३१ में न्यूयार्क में इनका देहान्त हो गया। दो दिन तक इनके शव के अंतिम दर्शनों के लिए सहस्रों आदमियों के झुंड के झुंड आते रहे। इनका शव इनकी अपनी जन्मभूमि को वापस लाया गया और बड़ी शान और राजसी सम्मान के साथ इनके अपने नगर के एक गिरजाघर में दफन किया गया।

रेत और झाग

इन समुद्र-तटों पर मैं उनके रेत और झागों के बीच सदा के लिए चलता रहूंगा। निस्सन्देह समुद्र का चढ़ाव मेरे चरण-चिह्नों को मिटा देगा और हवा समुद्र के झागों को उड़ाकर ले जाएगी, परन्तु यह समुद्र और उसका तट सदा के लिए—अनंत काल तक के लिए—रहेंगे।

◇ ◇ ◇

एक बार मैंने अपनी मुट्ठी कुहरे से भरी। फिर जो उसे खोला, तो कुहरे को एक कीड़ा बना पाया।

मैंने दुबारा मुट्ठी बंद की और खोली, तो वहां कीड़े की जगह एक चिड़िया थी।

फिर मैंने उसे बंद किया और खोला, तो मेरी हथेली पर एक आदमी खड़ा था, जिसका चेहरा शोकातुर था और दृष्टि ऊपर की तरफ।

अन्तिम बार मैंने फिर मुट्ठी बन्द की और फिर जो उसे खोला, तो वहां कुहरे के सिवाय कुछ भी न था।

परन्तु इस बार मैंने एक अत्यन्त मधुर और रसीला गीत सुना।

◇ ◇ ◇

कल तक मेरा विचार था कि मैं एक सूक्ष्म टुकड़ा हूं, जो अनियमित रूप से जीवन के घेरे में चक्कर लगा रहा है। पर

आज मैं यह समझता हूं कि मैं स्वयं ही वह घेरा हूं जिसमें समस्त जीवन नियमित रूप से घूमनेवाले टुकड़ों के साथ चक्कर लगा रहा है।

◇ ◇ ◇

लोग अपनी जाग्रत अवस्था में मुझसे कहते हैं, "तू और यह संसार, जिसमें तू रहता है, एक अनन्त समुद्र के अनन्त तट का केवल रज कण मात्र है।"

और मैं अपनी स्वप्नमय अवस्था में उनसे कहता हूं, "मैं तो अनन्त समुद्र हूं और तीनों लोक मेरे तट पर रज के कण हैं।"

◇ ◇ ◇

मैं केवल एक बार ही निरुत्तर हुआ हूं। ऐसा भी तब ही हुआ, जबकि एक आदमी ने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो ?"

◇ ◇ ◇

परमात्मा के सर्वप्रथम विचार में एक देवता था। पर परमात्मा के सर्वप्रथम वचन से मानव—इन्सान—ही निकला।

◇ ◇ ◇

समुद्र और जंगल की वायु से हमें वाणी मिलने से सहस्रों वर्ष पहले, हम इन्सान सृष्टि के फड़फड़ाते और घूमते हुए इच्छुक जीव मात्र थे।

जब ऐसी अवस्था हो, तो फिर हम अपनी पुरानी बातों को केवल कल के शब्दों में किस तरह वर्णन कर सकते हैं ?

◇ ◇ ◇

स्फिंक्स[1] अपने जीवन में केवल एक बार ही बोला और तब उसने यही कहा, "एक रजकरण मरुस्थल–सहरा–है और एक मरुस्थल रजकरण है। अब हम सबको मौन धारण कर लेना चाहिए।"

मैंने उसकी बात सुनी तो अवश्य, पर मैं समझा कुछ भी नहीं।

◇ ◇ ◇

मैंने एक बार एक स्त्री के चेहरे पर नजर डाली और उसके उन सब बच्चों को देख लिया, जो अब तक पैदा भी नहीं हुए थे।

एक स्त्री ने मुझे देखा और उसने मेरे सभी पूर्वजों को जान लिया, यद्यपि वे उसके जन्म से पहले ही मर चुके थे।

◇ ◇ ◇

मैं चाहता हूं कि मैं अपने परम ध्येय की पूर्ति करूं। परन्तु यह कैसे हो सकता है, जब तक कि मैं स्वयं अपने आपको उस महानता में लीन न कर दूं, जो बुद्धिमान आदमियों के जीवन में पाई जाती है?

क्या यही महानता हर एक मानव का ध्येय नहीं है?

◇ ◇ ◇

१. यूनान के पौराणिक साहित्य में एक ऐसे राक्षस का उल्लेख है, जिसके पंख होते हैं और जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का होता है। इसके बारे में यूनान में कई कथाएं प्रसिद्ध हैं। इसे स्फिंक्स कहते हैं। मिस्र देश के प्राचीन साहित्य में भी स्फिंक्स नाम की मूर्ति का वर्णन है, जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का बताया गया है।

मोती एक ऐसा मन्दिर है, जिसे दुःख और कष्ट के हाथों ने एक रजकरण के इर्दगिर्द निर्माण किया है।

तो फिर कौन-सी इच्छा ने हमारे शरीरों का निर्माण किया और वह कौन-से रजकरण हैं जिनके गिर्द हमारे शरीरों को बनाया ?

  

जब परमात्मा ने मुझे एक छोटी-सी कंकरी के रूप में इस अद्भुत झील में फेंका, तो मैंने अनन्त घेरे बनाकर इसके तल की शांति में विघ्न डाल दिया।

पर जब मैं इसकी गहराइयों में पहुंचा तो मैं बहुत ही शांत हो गया।

  

मुझे खामोशी प्रदान कर दो, फिर मैं रात को चुनौती देकर उससे बढ़ जाऊंगा।

  

मेरा दूसरा जन्म उस समय हुआ, जब मेरी आत्मा और मेरे शरीर ने आपस में प्रेम किया और उन दोनों का सम्बन्ध हो गया।

  

मेरा एक आदमी से परिचय हुआ, जिसकी सुनने की शक्ति बहुत तेज थी, पर वह गूंगा था। उसकी जिह्वा एक लड़ाई में जाती रही थी।

आज मैं उन सभी लड़ाइयों को जानता हूं, जो कि उस आदमी ने लड़ी थीं। इससे पहले कि वह महान् मौन उसे प्राप्त

हुआ, मैं प्रसन्न हूं कि वह मर गया है, क्योंकि यह संसार हम दोनों के लिए काफी नहीं है।

  

मैं एक युग तक खामोश और ऋतुओं से अनभिज्ञ मिस्र देश की रेत में पड़ा रहा।

इसके बाद सूर्य ने मुझे जन्म दिया और मैं उठ खड़ा हुआ; और मैं दिनों में गाता हुआ और रातों में स्वप्न देखता हुआ नील नदी के किनारे-किनारे चलने लगा।

अब सूर्य अपनी सहस्रों किरणों से मुझपर आक्रमण कर रहा है, जिससे मैं दुबारा मिस्र की रेत में सो जाऊं।

पर यह कितनी अनोखी बात और पहेली है! जिस सूर्य ने मेरे जीवन तत्वों को इकट्ठा किया, अब वही उन्हें अलग-अलग नहीं कर सकता।

फिर भी मैं दृढ़ता और विश्वास के साथ नील नदी के किनारे चल रहा हूं।

 

याद रखना भी मिलन का एक रूप है।

 

भूल जाना भी स्वतंत्रता का एक रूप है।

 

हम काल को असंख्य नक्षत्रों की चाल से मापते हैं। और दूसरे आदमी काल को उन छोटे-छोटे यन्त्रों से मापते हैं, जिन्हें वह अपनी जेबों में लिए फिरते हैं।

फिर तुम ही मुझे बताओ, कि मैं और वह दोनों एक ही स्थान पर एक ही समय में कैसे मिल सकते हैं?

◇ ◇ ◇

आकाश-गंगा के झरोखों में से देखनेवाले के लिए धरती और आकाश के बीच का लोक लोक नहीं है।

◇ ◇ ◇

मानवता प्रकाश की वह प्रवाहशील नदी है, जो अनादि से अनन्त की ओर बहती है।

◇ ◇ ◇

क्या देवलोक में रहनेवाली आत्माएं दुख और शोक के मारे इन्सान पर ईर्ष्या नहीं करतीं ?

◇ ◇ ◇

तीर्थस्थान को जाते हुए मेरी भेंट एक दूसरे यात्री से हुई। मैंने उससे पूछा, "क्या तीर्थ का ठीक रास्ता यही है ?"

उसने उत्तर दिया, "मेरे पीछे-पीछे चले आओ, एक दिन और एक रात में तुम तीर्थक्षेत्र पहुंच जाओगे ?"

मैं उसके पीछे-पीछे हो लिया। कई दिन और कई रात हम चलते रहे, फिर भी हम तीर्थक्षेत्र न पहुंचे।

मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह यात्री इस बात पर मुझपर क्रोध कर रहा है कि उसने मुझे ठीक रास्ते पर नहीं चलाया।

◇ ◇ ◇

परमात्मा ! इससे पहले कि तू खरगोश को मेरा शिकार बनाए, मुझे शेर का शिकार बना दे।

◇ ◇ ◇

रात के रास्ते में से होकर जाने के सिवा प्रभात तक कोई कैसे पहुंच सकता है ?

◇ ◇ ◇

मेरा घर मुझसे कहता है, "मुझे मत छोड़ क्योंकि तेरा अतीत यहीं है।"

और मेरा रास्ता मुझसे कहता है, "मेरे पीछे-पीछे चला आ क्योंकि मैं तेरा भविष्य हूं।"

पर मैं अपने घर और रास्ते दोनों से कहता हूं, "मेरा न कोई अतीत है और न भविष्य। यदि मैं यहां ठहरूं, तो मेरे ठहरने में ही मेरा चलना है। और यदि मैं चलूं, तो मेरा चलना ही मानो मेरा ठहरना है। केवल प्रेम और मौत सब वस्तुओं को बदलते हैं।"

◇ ◇ ◇

मैं जीवन के न्याय पर से अपना विश्वास कैसे उठा दूं, जब कि मैं यह जानता हूं कि नरम-नरम मखमली गद्दों पर सोनेवालों के स्वप्न कठोर धरती पर सोनेवालों के स्वप्नों से अधिक मधुर नहीं होते ?

◇ ◇ ◇

यह बड़ी ही विचित्र बात है कि कुछ सुखों की इच्छा ही मेरे दु:खों का अंश है।

◇ ◇ ◇

सात बार मैंने अपनी आत्मा को धिक्कारा है—

१—जब मैंने उसे बड़प्पन-प्राप्ति के लिए नरम होते देखा।

२—जब मैंने उसे पतितों के सामने झुककर चलते देखा।

३—जब उसे सरल और कठोर कामों में से किसी एक काम को चुनने का मौका दिया गया, और उसने सरल काम को पसन्द किया।

४—जब उसने कोई अपराध और पाप किया और यह कहकर अपने को संतोष दे लिया कि दूसरे भी उसकी ही तरह अपराध और पाप करते हैं।

५—जब उसने अपनी दुर्बलता के कारण किसी अत्याचार को सहन किया और फिर यह कहा कि संतोष और शांति धारण करना भी गुण हैं।

६—जब उसने किसी कुरूप चहरे को देखकर उससे घृणा की और यह न समझा कि वास्तव में यह उसका—मेरी आत्मा—का ही दूसरा रूप है।

७—जब उसने अपनी बड़ाई की डींग मारी या दूसरों की अनुचित प्रशंसा की और उसे भी एक गुण समझा।

◇ ◇ ◇

मैं 'पूर्ण सत्य' से अपरिचित हूं। पर मैं अपने अज्ञान के सामने नम्र बन जाता हूं और मेरे लिए इसीमें गर्व भी है और पुरस्कार भी।

◇ ◇ ◇

इन्सान की कल्पनाओं और उसकी पहुंच के बीच में अंतर है, जिसे केवल उसकी इच्छा ही पार कर सकती है।

◇ ◇ ◇

स्वर्ग इस द्वार के पीछे बराबरवाले कमरे में है, परन्तु उसकी कुंजी मेरे पास से खो गई है। नहीं-नहीं, शायद मैंने कहीं

दूसरे स्थान पर उसे रख दिया है ।

◇ ◇ ◇

तुम अंधे हो और मैं बहरा और गूंगा । इसलिए आओ हम आपस में मिलें और संसार को समझें ।

◇ ◇ ◇

मानव की प्रतिष्ठा और गौरव उस वस्तु से नहीं है, जिसे कि वह प्राप्त करता है, बल्कि उस वस्तु से है, जिसकी प्राप्ति के लिए वह तड़पता रहता है ।

◇ ◇ ◇

हममें से कुछ स्याही के सदृश हैं और कुछ कागज के सदृश ।

यदि हममें से कुछ में कालापन न होता, तो हममें से कुछ गूंगे ही बने रहते ।

और यदि हममें से कुछ में सफेदी न होती, तो हम में से कुछ अंधे ही रह जाते ।

◇ ◇ ◇

तुम जरा मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें बोलना सिखा दूंगा ।

◇ ◇ ◇

हमारा मन अस्पन्ज के समान है, और हमारा हृदय एक नदी ।

तो क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हममें से बहुत-से बहता रहने की अपेक्षा चूसने को अधिक पसन्द करते हैं ?

◇ ◇ ◇

जब तुम उन वरदानों की इच्छा करते हो, जिनके नाम

तुम्हें मालूम न हों और जब तुम शोकातुर हो, पर अपने शोक का कारण न जानते हो, वास्तव में उस समय ही बढ़ती हुई वस्तुओं के साथ-साथ तुम भी बढ़ रहे हो और अपनी आत्मा की महानता की ऊंचाइयों की तरफ उठ रहे हो।

◇ ◇ ◇

जब इन्सान किसी विचार के नशे में चूर होता है, तब वह उसकी धुंधली अभिव्यक्ति को ही मदिरा कहने लगता है।

◇ ◇ ◇

तुम मदिरा इसलिए पीते हो कि तुम मस्त हो जाओ, और मैं मदिरा इसलिए पीता हूं कि वह मेरी दूसरी मस्तियों के नशे को कम कर दे।

◇ ◇ ◇

जब मेरा प्याला खाली होता है, तब तो मैं संतोष कर लेता हूं। पर जब वह आधा भरा होता है, तो मैं उसपर क्रोध करता हूं।

◇ ◇ ◇

इन्सान की वास्तविकता उन वस्तुओं में नहीं है, जिन्हें वह तुमपर प्रकट करता है, बल्कि उन वस्तुओं में है, जिन्हें वह तुमपर प्रकट नहीं कर सकता।

इसलिए यदि तुम इन्सान को समझना चाहते हो, तो जो कुछ वह कहता है, उसे मत सुनो, बल्कि उन बातों को सुनो जिन्हें वह कह नहीं रहा है।

◇ ◇ ◇

जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, इसका आधा भाग निरर्थक

है, पर मैं इसको इसलिए कहता हूं कि दूसरा आधा भाग तुम्हारी समझ में आ जाए।

◇ ◇ ◇

आनन्दवृत्ति सन्तुलन की भावना के सदृश है।

◇ ◇ ◇

मेरे मन में एकान्तवास की इच्छा उस समय पैदा हुई, जब कि लोगों ने मेरे प्रकट दोषों की तो प्रशंसा की और मेरे अप्रकट गुणों की निंदा की।

◇ ◇ ◇

जब जीवन को अपने हृदय का गीत गानेवाला गायक नहीं मिलता, तभी वह किसी ऐसे दार्शनिक को जन्म देता है, जो उसके मन की बात कह सके।

◇ ◇ ◇

सत्य को जानना तो सदा चाहिए, पर उसको कहना कभी-कभी चाहिए।

◇ ◇ ◇

हममें जो सत् तत्व है, वह तो मौन रहता है, पर जो बाहर से प्राप्त किया हुआ तत्व है, वही बोलता रहता है।

◇ ◇ ◇

मेरे जीवन की आवाज तेरे जीवन के कानों तक नहीं पहुंच सकती। फिर भी हमें आपस में बातें करते ही रहनी चाहिएं, जिससे हम अकेलापन अनुभव न करें।

◇ ◇ ◇

जब दो स्त्रियां आपस में बातें करती हैं, तो वह कुछ भी

नहीं कहतीं, पर जब एक स्त्री बोलती है तो वह समस्त जीवन को प्रकट कर देती है।

◇ ◇ ◇

कभी-कभी मेढक बैलों से भी अधिक शोर कर सकते हैं, पर मेढक न खेत में हल चला सकते हैं, न कोल्हू में जोते जा सकते हैं और न तुम उनकी खाल से जूतियां ही बना सकते हो।

◇ ◇ ◇

बातूनी आदमी पर सिवाय गूंगे आदमी के और कोई दूसरा ईर्ष्या नहीं करता।

◇ ◇ ◇

यदि शीत ऋतु यह कहे कि वसंत ऋतु मेरे हृदय में है, तो उसकी बात कौन मानेगा ?

◇ ◇ ◇

हर एक बीज एक इच्छा के सदृश है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम सचमुच आंखें खोलकर देखो तो तुम्हें प्रत्येक चहरे में अपनी आकृति दिखाई देगी।

और यदि अच्छी तरह कान खोलकर सुनो तो तुम्हें सभी वाणियों में अपनी वाणी सुनाई देगी।

◇ ◇ ◇

सत्य की खोज करने के लिए दो आदमी चाहिएं, एक इसको कहनेवाला और दूसरा उसे समझनेवाला।

◇ ◇ ◇

हम शब्दों की लहरों में हर समय डूबे रहते हैं, पर हमारा

अंतरंग सदा चुप रहता है।

  

बहुत-से मत-मतान्तर खिड़की के शीशों के सदृश हैं। हम उनमें से सत्य को देखते तो हैं, पर वे हमें सत्य से अलग ही रखते हैं।

  

आओ, हम आंख-मिचौनी का खेल खेलें और एक दूसरे को ढूंढ़ें। यदि तुम मेरे हृदय में छुपो तो तुम्हें ढूंढ़ना मेरे लिए कठिन न होगा। पर यदि तुम अपने ही तन में छुप गए तो मेरे लिए तुमको ढूंढ़ना ही व्यर्थ होगा।

  

एक स्त्री अपने चेहरे के भावों को एक हल्की-सी मुस्कराहट के परदे से ढक सकती है।

  

वह दुःखी हृदय भी कितना श्रेष्ठ है, जो दूसरे प्रसन्नचित्त मनुष्यों के साथ आनन्दपूर्ण गीत गा सकता है।

  

जो आदमी एक स्त्री को समझ सकता है, एक प्रतिभाशाली मनुष्य की सूक्ष्म परीक्षा कर सकता है और मौन के रहस्य का पता लगा सकता है, वास्तव में वही आदमी एक मधुर स्वप्न से जागकर प्रातःकाल कलेवे के लिए बैठता है।

  

मैं सभी चलनेवालों के साथ चलूंगा और अवश्य चलूंगा। पर मैं पास से जानेवाले आदमियों की भीड़ का तमाशा देखने

के लिए निश्चल खड़ा नहीं रहूंगा।

◇ ◇ ◇

जो आदमी तुम्हारी सेवा करता है, तुम स्वर्ण से भी मूल्यवान पदार्थ के लिए उसके ऋणी हो। इसलिए या तो उसे अपना हृदय दो या उसकी सेवा करो।

◇ ◇ ◇

हां ! हमारे जीवन व्यर्थ नहीं बीते। क्या ये वैभवशाली स्तम्भ लोगों ने हमारी हड्डियों से निर्माण नहीं किए ?

◇ ◇ ◇

न तो हमें किसी विशेष व्यक्ति का अन्धा अनुयायी बनना चाहिए और न किसी सम्प्रदाय विशेष का अनुयायी। कवि की कल्पना और बिच्छू का डंक एक ही धरती से उठकर बड़ाई पाते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रत्येक सांप एक संपोलिया पदा करता है, जो बड़ा होकर उसीको खा जाता है।

◇ ◇ ◇

वृक्ष वह कविताएं हैं, जिन्हें पृथ्वी आकाश के पन्नों पर लिखती है। पर हम इन्हें काटकर इनसे कागज बनाते हैं, जिससे हम उनपर खोखले विचारों को लिख सकें।

◇ ◆ ◇

जब तुम अपने हृदय में कुछ लिखने की प्रेरणा अनुभव करो (और इस प्रेरणा का ज्ञान सिवाय अन्तर्यामी के और किसीको नहीं होता) तो तुम्हारे भीतर तीन बातें होनी

चाहिएं; ज्ञान, कला और मोहिनी जादू।

शब्दों के संगीत का ज्ञान,
कलाहीन होने की कला,
और श्रोताओं को मोह लेनेवाला जादू।

◇ ◇ ◇

कवि हमारे हृदयों के खून में अपनी लेखनी डुबोते हैं और फिर समझते हैं कि उन्हें अंत: प्रेरणा हुई है।

◇ ◇ ◇

यदि एक वृक्ष अपनी आत्मकथा लिख सकता, तो वह किसी जाति के इतिहास से भिन्न न होती।

◇ ◇ ◇

मुझे यदि कविता लिखने की शक्ति और अलिखित कविता के आनन्द में से किसी एक को चुनने का अवसर मिले, तो निस्सन्देह मैं आनन्द लेना अधिक पसन्द करूंगा, क्योंकि वह कविता से बेहतर है।

पर तुम और मेरे सभी पड़ोसी इस बात पर सहमत हैं कि मैं अच्छी वस्तु को छोड़कर बुरी वस्तु पसन्द करता हूं।

◇ ◇ ◇

कविता कोई मत या दृष्टिकोण नहीं है, जिसे शब्दों में प्रकट किया जा सके। यह तो वह गीत है, जो किसी खून बहते हुए घाव से या मुस्कराते हुए मुख से निकलता है।

◇ ◇ ◇

शब्द काल के बन्धन से स्वतन्त्र हैं। इसलिए उनको कहते या लिखते समय तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए।

◇ ◇ ◇

एक कवि सिंहासन से उतारे हुए राजा के सदृश है, जो अपने महल की राख पर बैठा इससे अनेक प्रकार की मूर्तियां बना रहा है।

  

आनन्द, वेदना और आश्चर्य के रस में कुछ शब्दों को समो देना ही कविता है।

  

कवि अपने हृदय के गीतों के निकास को ढूंढ़ने का प्रयत्न व्यर्थ करता है।

  

एक बार मैंने एक कवि से कहा, "हम तुम्हारा महत्व तुम्हारे मरने के बाद तक न जानेंगे।"

उसने उत्तर दिया, "हां, मृत्यु ही यथार्थता को सदा प्रकट करती है। और यदि तुम वास्तव में मेरा मूल्य जानना चाहते हो, तो इसका कारण यही है कि जो कुछ मेरी जीभ पर है, उससे कहीं अधिक मेरे हृदय में है, और जो कुछ मेरे हाथ में है, उससे कहीं अधिक मेरी तमन्नाओं में है।"

  

यदि तुम सौन्दर्य के गीत गाओगे, तो उनको सुननेवाला तुम्हें अवश्य मिल जाएगा, चाहे तुम सहरा के बीच में ही क्यों न गाओ।

  

कविता वह दर्शन है, जो हृदयों को मोह लेता है। और दर्शन, वह कविता है, जो मन में गाता है। यदि हम दोनों क

समन्वय कर सकें, और एक ही समय में मनुष्य के हृदय को मोह भी सकें और उसके मन में गा भी सकें, तो सचमुच वह परमात्मा की छाया में जीवन बिताने लगे।

◇ ◇ ◇

अंतः प्रेरणा के गीत सदा गाए जाते हैं, अंतः प्रेरणा की व्याख्या नहीं की जाती।

◇ ◇ ◇

हम प्रायः बच्चों को सुलाने के लिए लोरी गाते हैं, जिससे कि हम स्वयं सो सकें।

◆ ◇ ◇

हमारी सब कविताएं रोटी के ऐसे कौर हैं, जो कल्पना-शील मन के भोजन से गिरते हैं।

◇ ◇ ◇

विचार और चिंतन कविता के रास्ते में बड़ी रुकावट है।

◇ ◇ ◇

सबसे बड़ा गायक वह है, जो हमारे मौन के गीत गाता है।

◇ ◇ ◇

तुम्हारा पेट तो भरा हुआ है, फिर तुम कैसे गा सकते हो?

तुम्हारे हाथ तो रुपयों से भरे हुए हैं, फिर वे परमात्मा की वन्दना के लिए कैसे उठ सकते हैं?

◇ ◇ ◇

कहा जाता है, कि बुलबुल जब प्रेमभरे गीत गाती है, तो पहले अपने हृदय को कांटे से चीर डालती है।

हमारा भी यही हाल है। नहीं तो, हम प्रेम के गीत कैसे गा सकते हैं ?

◇ ◇ ◇

प्रतिभा एक गीत है, जिसे पक्षी बड़ी प्रतीक्षा के बाद आने-वाली बसन्त ऋतु के आने पर गाता है।

◇ ◇ ◇

महात्मा भी शारीरिक आवश्यकताओं से छुटकारा नहीं पा सकते।

◇ ◇ ◇

एक पागल भी मेरे और तुम्हारे से कम गवैया नहीं है। अन्तर केवल यही है कि जिन बाजों को वह बजाता है, वे कुछ बेसुरे हैं।

◇ ◇

मां के हृदय की खामोशियों में सोया हुआ गीत उसके बच्चे के होंठों पर खेलता है।

◇ ◇ ◇

इस संसार में ऐसी कोई इच्छा नहीं है, जो पूरी न हो सके।

◇ ◇ ◇

मैं अपनी अन्तरात्मा से कभी पूरे रूप से सहमत नहीं हुआ हूं। मालूम होता है कि यथार्थ बात कहीं हम दोनों के बीच में है।

◇ ◇ ◇

तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हारे लिए सदा दुःख मानती रहती है। पर यह दुःख ही उसको पुष्ट करनेवाला भोजन है। इसलिए यह सब ठीक ही है।

◇ ◇ ◇

आत्मा और शरीर का संघर्ष उन आदमियों के हृदयों के सिवाय और कहीं नहीं है, जिनकी आत्माएं सो रही हैं और जिनके शरीर ताल-स्वर-हीन हैं।

◇ ◇ ◇

यदि तुम जीवन की तह तक पहुंच जाओ, तो तुम्हें हर एक वस्तु में सौन्दर्य दिखाई देगा। यहां तक कि उन आंखों में भी जो सौन्दर्य को देखने में असमर्थ हैं।

◇ ◇ ◇

सौन्दर्य हमारी खोई हुई पूंजी है, जिसे हम समस्त जीवन खोजते रहते हैं। इसके सिवा सब कुछ प्रतीक्षा की एक न एक विधि है।

◇ ◇ ◇

बीज डालो। धरती तुम्हारे लिए फूल पैदा करेगी। अपने स्वप्नों की आकाश में तलाश करो। आकाश तुम्हें तुम्हारी प्रेयसी से मिला देगा।

◇ ◇ ◇

शैतान तो उसी दिन मर गया, जिस दिन तुम जन्मे थे। अब तुम्हें देवताओं के दर्शन के लिए नर्क में से गुजरने की क्या आवश्यकता ?

◇ ◇ ◇

बहुत-सी स्त्रियां पुरुषों का मन मोह लेती हैं, पर बिरले

ही स्त्रियां उनको अपने वश में रख सकती हैं।

◇ ◇ ◇

यदि तुम किसी वस्तु को लेना चाहते हो, तो उसके लिए दावा मत करो।

◇ ◇ ◇

पुरुष जब एक स्त्री के हाथ को छूता है, तो वे दोनों अनन्त की आत्मा को छूते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रेम दो प्रेमियों के बीच में एक परदा है।

◇ ◇ ◇

हर एक पुरुष दो स्त्रियों से प्रेम करता है। एक वह स्त्री जिसकी रचना उसकी कल्पना करती है और दूसरी वह जिसने अभी तक जन्म नहीं लिया है।

◇ ◆ ◇

जो पुरुष स्त्रियों के छोटे-छोटे अपराधों को क्षमा नहीं करते, वे उसके महान् गुणों का सुख नहीं भोग सकते।

◇ ◇ ◇

जो प्रेम नित नया नहीं होता रहता, वह एक आदत का रूप धारण कर लेता है और फिर बंधन बन जाता है।

◇ ◇ ◇

दो प्रेमी आलिंगन करते समय एक दूसरे का इतना आलिंगन नहीं करते जितना कि वे अपने बीच की किसी वस्तु का आलिंगन करते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रेम और सन्देह में आपस में कभी मेलजोल नहीं हो

सकता। वे दोनों एक हृदय में नहीं रह सकते।

◇ ◇ ◇

प्रेम एक दिव्य शब्द है, जिसे प्रकाशपूर्ण हाथ ने ज्योतिर्मय पृष्ठ पर लिखा है।

◇ ◇ ◇

मित्रता सदा एक मधुर उत्तरदायित्व है, न कि स्वार्थ-पूर्ति का अवसर।

◇ ◇ ◇

यदि तुम अपने मित्र को सब परिस्थितियों में नहीं जान सकते, तो तुम उसे कभी नहीं समझ सकोगे।

◇ ◇ ◇

तुम्हारे सुन्दरतम वस्त्र किसी दूसरे आदमी के बुने हुए हैं।

तुम्हारे स्वादिष्ट भोजन वे हैं, जो तुमने किसी दूसरे की रसोई में खाए हैं।

तुम्हारा अत्यन्त सुखदायक बिस्तर वह है, जिसपर तुम किसी दूसरे के घर में सोए हो।

फिर तुम ही बताओ, तुम अपने आपको दूसरे आदमी से कैसे अलग कर सकते हो?

◇ ◇ ◇

तुम्हारी बुद्धि और मेरे हृदय में उस समय तक मेल नहीं हो सकता, जब तक कि तुम्हारी बुद्धि हिसाब लगाना न छोड़ दे और मेरा हृदय अन्धकार में रहना।

◇ ◇ ◇

हम एक दूसरे को उस समय तक नहीं समझ सकते,

जब तक कि हम भाषा को सात शब्दों[1] में सीमित न कर दें।

◇ ◇ ◇

मेरे हृदय की बात कैसे प्रकट हो सकती है, जब तक कि उसकी मुहरें न टूटें ?

◇ ◇ ◇

तुम्हारी यथार्थता को केवल महान दुःख या महान सुख ही प्रकट कर सकता है।

इसलिए यदि तुम अपनी यथार्थता को प्रकट करना चाहते हो, तो या तो तुम्हें नग्न होकर दिन में नाचना होगा, या फांसी पर चढ़ना होगा।

◇ ◇ ◇

यदि प्रकृति हमारे संतोष के उपदेश सुन ले, तो न कोई दरिया समुद्र तक जा पाएगा और न शीत ऋतु वसंत में ही बदलेगी।

और यदि वह हमारी मितव्ययिता की सब बातें सुन ले, तो हममें से कितने इस वायु में सांस ले सकेंगे ?

◇ ◇ ◇

जब तुम सूर्य की ओर पीठ फेर लेते हो, तब तुम अपनी परछाईं के सिवा और क्या देख सकते हो ?

तुम दिन के सूर्य के सामने भी स्वतंत्र हो।

तुम रात के चांद-तारों के सामने भी स्वतंत्र हो।

---

१. वे सात शब्द ये हैं—तुम, मैं, लो, परमात्मा, प्रेम, सुन्दरता, धरती। देखें—बारबैरा यंग रचित 'दिस मैन फ्राम लेबनान', पृ० ६१.।

और तुम तब भी स्वतंत्र हो, जब न सूर्य है और न चांद-तारे।

संसार की सब वस्तुओं की तरफ से आंखें बंद कर लेने पर भी तुम स्वतंत्र हो।

पर तुम उस आदमी के सामने गुलाम हो, जिसे तुम प्रेम करते हो, क्योंकि तुम उससे प्रेम करते हो।

और तुम गुलाम हो उस आदमी के सामने, जो तुम्हें प्रेम करता है, क्योंकि वह तुम्हें प्रेम करता है।



मन्दिर के द्वार पर हम सब भिखारी हैं।

और जब हम मन्दिर में प्रवेश करते हैं और बाहर आते हैं, तो, हममें से हर एक आदमी संसार के सम्राट्—परमात्मा—से अपना-अपना अंश, हिस्सा लेकर चला आता है।

फिर भी हम एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। हमारा यह व्यवहार उस सम्राट् को तुच्छ समझने का ही एक दूसरा ढंग है।



तुम अपनी भूख से अधिक नहीं खा सकते। इसलिए जो आधी रोटी तुमने नहीं खाई है, वह किसी दूसरे का हिस्सा है। और हां, तुम्हें कुछ रोटी अकस्मात् आ जाने वाले अतिथि के लिए भी रखनी चाहिए।



यदि अतिथि न होते तो सब घर कब्रें बन जाते।

◇　　　◇　　　◇

एक दयालु भेड़िए ने एक भोली भेड़ से कहा, "क्या आप दर्शन देकर हमारे घर की शोभा न बढ़ाएंगी ?"

भेड़ ने उत्तर दिया, "आपके घर आना हमारे लिए बड़े सौभाग्य और गर्व की बात होती, यदि वह घर आपके पेट में न होता।"

◇　　　◇　　　◇

मैंने द्वार पर अपने अतिथि को रोककर कहा, "मेरे घर में भीतर प्रवेश करते समय अपने पांव न झाड़िए, जब आप जाएंगे, तब अपने पांव झाड़िए।"

◇　　　◇　　　◇

दानशीलता यह नहीं है कि तुम मुझे वह वस्तु दो, जिसकी आवश्यकता मुझे तुमसे अधिक है। वरन यह है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता तुम्हें मुझसे अधिक है।

◇　　　◇　　　◇

तुम निस्सन्देह बड़े दयालु और दानी हो, जब तुम किसी की आवश्यकता पूरी करते हो।

पर ध्यान रहे कि दान देते समय अपना मुंह दान लेने वाले की ओर से परे फेर लिया करो, जिससे कि तुम लेने वाले की झिझक और लज्जा को न देखो।

◇　　　◇　　　◇

अत्यन्त धनी और अत्यन्त निर्धन में एक दिन की भूख और एक घड़ी की प्यास का अन्तर है।

◇　　　◇　　　◇

हम प्रायः पुराना ऋण उतारने के लिए नया ऋण लेते हैं।

◇ ◇ ◇

मेरे पास देवता भी आते हैं और शैतान भी, पर मैं दोनों से छुटकारा पा लेता हूं।

जब कोई देवता आता है, तो मैं कोई पुरानी प्रार्थना पढ़ने लगता हूं और वह उकताकर मेरे पास से चला जाता है।

और जब कोई शैतान आता है, तो कोई पुराना पाप करने लगता हूं और वह मेरे पास से गुजर जाता है।

◇ ◇ ◇

यह कैदखाना कोई बुरा कैदखाना नहीं है। पर मैं अपनी कोठरी और दूसरे कैदी की कोठरी के बीच यह दीवार पसंद नहीं करता।

तो भी मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूं कि न मैं कैदखाने के पहरेदार के सर बुराई मढ़ना चाहता हूं और न कैदखाने के निर्माता के।

◇ ◇ ◇

जो लोग तुम्हें रोटी मांगने पर पत्थर देते हैं, हो सकता है कि उनके पास देने के लिए पत्थर ही हों। तो उनकी यह भी दानशीलता ही है।

◇ ◇ ◇

पापाचार कभी-कभी सफल हो जाता है, पर इसका फल घातक ही होता है।

◇ ◇ ◇

वाह ! तुम्हारी उस क्षमाशीलता का क्या कहना है,

जो,

उन घातकों को क्षमा कर दे, जिन्होंने खून की एक बूंद भी नहीं गिराई।

उन चोरों को दंड न दे, जिन्होंने एक तिनका भी न चुराया।

और उन झूठों को कुछ न कहे, जिन्होंने झूठ का एक शब्द भी नहीं कहा।

  

जो आदमी भलाई को बुराई से अलग करनेवाली रेखा पर अंगुली रख सकता है, निस्सन्देह वही आदमी परमात्मा के चरणों को छू सकता है।

  

यदि तेरे हृदय में ज्वालामुखी धधक रही है, तो तुम अपने हाथों में फूलों के खिलने की आशा कैसे करते हो ?

  

आत्मअनुग्रह का यह भी विचित्र ढंग है कि कभी-कभी मैं अपने आपको लोगों के अत्याचार और धोखे का शिकार इसलिए बनाना चाहता हूं कि मैं उन लोगों की बुद्धि पर हंस सकूं, जो यह समझते हैं कि मैं अपने साथ होनेवाले अत्याचार और धोखे को नहीं समझता।

  

मैं उस खोजी के बारे में क्या कहूं, जो स्वयं ही परमात्मा का स्वांग भर रहा है।

अपने कपड़े उसको दे दो, जो अपने हाथ उनसे पोंछता है। सम्भव है, उसे उनकी फिर आवश्यकता हो जाए, पर तुम्हें तो अब इनकी आवश्यकता होगी ही नहीं।

◇ ◇ ◇

यह बड़े ही खेद की बात है कि सर्राफ लोग अच्छे माली नहीं बन सकते।

कृपा करके अपने स्वाभाविक दोषों को अपने प्राप्त गुणों से मत छुपाओ। मैं तो अपने दोषों को भी रखना चाहूंगा, क्योंकि आखिर वे मेरे अपने ही तो हैं।

◇ ◇ ◇

बहुत बार मैंने अपने आपको उन अपराधों का दोषी ठहराया है, जो मैंने स्वप्न में भी नहीं किए, जिससे मेरे पास बैठनेवाला अपराधी भी मेरी संगति में अपने को मुझसे हीन न समझे।

◇ ◇ ◇

जीवन के परदे ही उससे भी गहरे रहस्य के परदे हैं।

◇ ◇ ◇

तुम अपने आत्मज्ञान के अनुसार ही दूसरों के गुण-दोषों का निर्णय कर सकते हो।

पर अब मुझे बताओ तो सही कि हममें कौन अपराधी है और कौन निरपराध।

◇ ◇ ◇

वह आदमी वास्तव में न्यायवान है, जो तुम्हारे अपराधों के लिए अपने आपको आधा अपराधी अनुभव करता है।

◇ ◇ ◇

इन्सानी कानूनों को केवल एक मूर्ख आदमी और एक अपूर्व बुद्धिमान ही तोड़ सकते हैं। और ये दोनों ही परमात्मा के हृदय के समीपतम हैं।

◇ ◇ ◇

जब कुछ आदमी तुम्हारा पीछा करते हैं, केवल तब ही तुम कुछ तेज चलते हो।

◇ ◇ ◇

हे परमात्मा ! मेरा कोई शत्रु नहीं है। पर यदि मेरा कोई शत्रु होना हो ही, तो फिर उसकी शक्ति मेरी जितनी ही हो, जिससे केवल सत्य ही जीते।

◇ ◇ ◇

शत्रु से तुम्हारा पूरा मेलजोल तब होगा, जब तुम दोनों मर जाओगे।

◇ ◇ ◇

शायद आदमी आत्मरक्षा के विचार से आत्मघात भी कर ले।

◇ ◇ ◇

प्राचीन काल में एक महापुरुष था। उसे लोगों ने इसलिए शूली पर चढ़ा दिया कि वह लोगों से अत्यन्त प्रेम करता था और लोग उससे।

पर तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा कि अभी हाल में मैंने उसे तीन बार देखा।

पहली बार मैंने उसे एक सिपाही से प्रार्थना करते देखा कि वह वेश्या को कैदखाने में न ले जाए।

दूसरी बार मैंने उसे एक शराबी के साथ शराब पीते देखा।

और तीसरी बार मैंने उसे गिरजाघर में एक पादरी से मुक्कमुक्का होते देखा।

◇ ◇ ◇

पाप और पुण्य के बारे में जो कुछ लोग कहते हैं, यदि वह सब कुछ सच है, तो फिर मेरा सारा जीवन ही एक लम्बा अपराध है।

◇ ◇ ◇

दया आधा न्याय है।

◇ ◇ ◇

मेरे साथ केवल उस आदमी ने ही अन्याय किया, जिसके भाई के साथ मैंने अन्याय किया था।

◇ ◇ ◇

यदि तुम किसी आदमी को कैदखाने लिए जाते हुए देखो, तो अपने मन में यह कहो, "कदाचित यह इससे भी अधिक तंग और अंधेरे कैदखाने से बचना चाहता हो।"

और यदि तुम नशे में चूर किसी आदमी को देखो, तो अपने मन में यह कहो, "कदाचित इसने नशे से भी बुरी चीजों से बचने के लिए शराब पी हो।"

◇ ◇ ◇

कई बार आत्मरक्षा के लिए मुझे दूसरों से घृणा करनी पड़ी है। पर यदि मुझमें इससे अधिक शक्ति होती, तो मैं अपने बचाव के लिए यह साधन काम में न लाता।

◇ ◇ ◇

कितना मूर्ख है वह आदमी जो अपनी आंखों की घृणा को अपने होंठों की मुस्कराहट से छिपाना चाहता है !

◇ ◇ ◇

जो मुझसे छोटे हैं, वेही मुझसे ईर्ष्या या घृणा कर सकते हैं।

पर न तो मेरेसे किसीने ईर्ष्या की है और न घृणा। इससे मालूम होता है कि मैं किसीसे बड़ा नहीं हूं।

जो मुझसे बड़े हैं, वेही मेरी प्रशंसा या तिरस्कार कर सकते हैं।

पर न तो किसीने मेरी प्रशंसा की है और न मेरा तिरस्कार। इससे मालूम होता है कि मैं किसीसे छोटा भी नहीं हूं।

◇ ◇ ◇

तुम्हारा यह कहना, "मैं आपकी बात नहीं समझता" मेरी ऐसी प्रशंसा है, जिसका मैं अधिकारी नहीं और ऐसा तिरस्कार है जिसके तुम योग्य नहीं।

◇ ◇ ◇

मैं कितना अधम हूं कि जीवन ने मुझे स्वर्ण दिया और मैं तुम्हें चांदी देता हूं और फिर भी मैं अपने आपको दानी समझता हूं।

◇ ◇ ◇

जब तुम अपने जीवन की गहराइयों तक पहुंच जाओगे, तब तुम्हें मालूम होगा कि न तो तुम पापियों से ऊंचे और श्रेष्ठ हो और न अवतारों से नीचे और कम हो।

◇ ◇ ◇

यह बड़े अचम्भे की बात है कि तुम एक मंद गतिवाले आदमी से तो सहानुभूति कर लो, एक मंद विचारक से नहीं; एक आंखों के अंधे से तो सहानुभूति करते हो, हिये के अंधे से नहीं।

◇ ◇ ◇

एक लंगड़े आदमी के लिए बुद्धिमानी इसी बात में है कि अपनी लाठी अपने शत्रु के सिर पर मारकर न तोड़े।

◇ ◇ ◇

वह आदमी कितना अंधा है, जो अपनी जेब के रुपयों से तेरा हृदय मोल लेना चाहता है!

◇ ◇ ◇

जीवन एक लम्बी यात्रा है। मंद गतिवाले इसे तेज पाकर इसमें से अलग निकल जाते हैं। और तेज चलनेवाले भी इसे अत्यन्त मंद गतिवाला पाकर इसमें से बाहर निकल जाते हैं।

◇ ◇ ◇

यदि पाप नाम की कोई वस्तु है, तो हममें से कुछ तो अपने पुरखाओं का अनुसरण करके पीछे देखते हुए पाप करते हैं।

और कुछ आगे देखते हुए अपनी आनेवाली संतान को अपने अधिकार से दबाकर करते हैं।

◇ ◇ ◇

यथार्थ में अच्छा आदमी वही है, जो उन सब लोगों से मिलकर रहता है, जो बुरे समझे जाते हैं।

◇ ◇ ◇

हम सब कैदी हैं। भेद केवल इतना ही है कि हममें से कुछ लोग खिड़कियोंवाली कोठड़ियों में बंद हैं और कुछ काल कोठड़ियों में।

◇ ◇ ◇

यह कितने आश्चर्य की बात है कि हम अपने अपराधों की सफाई पर अपने अधिकारों की रक्षा की अपेक्षा अधिक शक्ति लगाते हैं।

◇ ◇ ◇

यदि हम एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को स्वीकार कर लें, तो हम एक दूसरे पर हंसेंगे कि हम कोई नया पाप नहीं करते।

और यदि हम सब अपने-अपने पुण्य के कामों को एक दूसरे पर प्रकट करे, तो भी एक दूसरे पर इसी कारण से हंसेंगे।

◇ ◇ ◇

एक व्यक्ति समाज के नियमों से ऊंचा होता है, जब तक कि वह समाज की परम्पराओं के विरुद्ध कोई काम नहीं करता।

और उसके बाद न वह किसीसे बड़ा है न छोटा।

◇ ◇ ◇

राज्य तेरे और मेरे बीच एक समझौता है। और प्रायः आप और मैं दोनों ही गलती पर होते हैं।

◇ ◇ ◇

अपराध क्या है? या तो वह आवश्यकता का दूसरा नाम

है या किसी बुराई का लक्षण ।

  

इससे बड़ा और क्या अपराध हो सकता है कि हम दूसरों के अपराधों को जानते रहें ।

  

जब कोई दूसरा आदमी तुमपर हंसता है, तो तुम उस-पर दया कर सकते हो, पर जब तुम उसपर हंसते हो, तो तुम अपने आपको शायद कभी भी क्षमा न करो ।

जब कोई दूसरा आदमी तुम्हारे साथ बुराई करता है, तो तुम उस बुराई को भूल सकते हो, पर जब तुम उसके साथ बुराई करते हो, तो तुम उसे सदा याद रखोगे ।

  

सच बात तो यह है कि वह दूसरा आदमी तुम्हारी ही अत्यन्त चेतन आत्मा दूसरे शरीर के रूप में है ।

  

तुम कितने भूले हुए हो, जब तुम यह चाहते हो कि दूसरे आदमी तुम्हारे पंखों पर उड़ें और तुम उन्हें अपना एक पर भी नहीं दे सकते ।

  

एक बार एक आदमी मेरे साथ आ बैठा । वह मेरी रोटी खाकर और मेरी शराब पीकर मुझपर हंसता हुआ चला गया ।

इसके बाद वह फिर रोटी और शराब के लिए मेरे पास

आया और मैंने उसे तिरस्कृत करके चलता किया, तो देवता मुझपर खूब हंसे।

◇ ◇ ◇

घृणा तो एक मृत शरीर है। फिर तुममें से कौन उसके लिए कब्र बनना पसन्द करेगा ?

◇ ◇ ◇

जिसकी हत्या की गई है, उसके लिए यह बड़े गर्व की बात है कि वह हत्यारा नहीं है।

◇ ◇ ◇

मानवता का न्यायकर्ता उसके मौन हृदय में है, न कि उसकी बातूनी बुद्धि में।

◇ ◇ ◇

लोग मुझे पागल समझते हैं कि मैं अपने जीवन को इनके चांदी-सोने के कुछ टुकड़ों के बदले में नहीं बेचता।

और मैं इन्हें पागल समझता हूं कि ये मेरे जीवन को बिकरी की एक वस्तु समझते हैं।

◇ ◇ ◇

लोग हमारे सामने अपना धन-दौलत फैलाते हैं और हम उनके सामने अपने हृदयों और आत्माओं को।

और फिर भी वे अपने आपको आतिथ्य करनेवाले और हमें अतिथि समझते हैं।

◇ ◇ ◇

मैं उन लोगों में छोटे से छोटा बनकर रहना पसन्द करूंगा जो कल्पनाशील और महत्वाकांक्षी हैं; न कि कल्पना-हीन और आकांक्षारहित लोगों में बड़े से बड़ा बनकर।

सबसे अधिक दया का पात्र वह आदमी है, जो अपने स्वप्नों को सोने-चांदी का ही रूप देता रहता है।

◇ ◇ ◇

हम सब अपनी हार्दिक इच्छाओं की ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहे हैं। यदि तुम्हारा साथी तुम्हारे भोजन का थैला और सूटकेस चुरा ले और तुम्हारा भोजन खाकर वह मोटाताजा हो जाए व सूटकेस के बोझ से दब जाए, तो तुम्हें उसपर तरस खाना चाहिए। इससे उसके भारी शरीर के लिए यात्रा कठिन और बोझ से लम्बी बन जाएगी।

और यदि तुम अपने आपको दुबला-पतला और हल्का-फुलका और अपने साथी को भारी और सांस फूला हुआ देखो, तो कुछ दूर उसकी सहायता अवश्य करो, इससे तुम्हारी चाल में तेजी आएगी।

◇ ◇ ◇

तुम किसी आदमी के बारे में उसके संबंध में अपने ज्ञान से बढ़कर कोई मत नहीं बना सकते। और तुम्हारा ज्ञान है ही कितना ?

◇ ◇ ◇

मैं उन विजेताओं की बात सुनने के लिए तैयार नहीं, जो पराजितों को उपदेश देना चाहते हैं।

◇ ◇ ◇

यथार्थ में स्वतन्त्र वह आदमी है, जो एक पराधीन व्यक्ति के बोझ को संतोष के साथ स्वयं उठा ले।

◇ ◇ ◇

एक सहस्र वर्ष हुए मुझसे मेरे एक पड़ोसी ने कहा, "मैं जीवन से घृणा करता हूं, क्योंकि इसमें दुःख और चिन्ता के सिवा कुछ नहीं।"

कल मैं कब्रिस्तान के पास से गुजरा, तो मैंने जीवन को इसी पड़ोसी की कब्र पर नाचते हुए देखा।

◇ ◇ ◇

इस संसार का संघर्ष एक ऐसी अव्यवस्था का नाम है, जिसमें व्यवस्था स्थापित करने की इच्छा है।

◇ ◇ ◇

एकान्त ऐसा मौन तूफान है, जो हमारे जीवन-वृक्ष की सब सूखी टहनियों को तोड़ डालता है। पर यह हमारी जीवित जड़ों को जीवित भूमि के जीवित हृदय में अधिक गहराई तक उतार देता है।

◇ ◇ ◇

एक बार मैंने एक समुद्र से एक नदी का जिकर किया, तो उसने मुझे एक कल्पनाशील अतिशयोक्ति करनेवाला समझा।

और जब मैंने एक नदी को एक समुद्र की बात सुनाई, तो उसने मुझे एक घटाकर बात करनेवाला समझा, जो किसी की निन्दा कर रहा हो।

◇ ◇ ◇

उस आदमी का दृष्टिकोण कितना तंग है, जो एक झिंगुर के संगीत की अपेक्षा एक चींटी की कार्यलीनता की अधिक बड़ाई करता है।

◇ ◇ ◇

इस संसार की उच्चतम श्रेष्ठता परलोक में अत्यन्त छोटी हो सकती है।

◇ ◇ ◇

गहरा आदमी गहराइयों में और उच्च विचारक ऊंचाइयों में सीधा चला जाता है। पर केवल बड़े हृदयवाले आदमी ही बड़े क्षेत्र में चक्कर लगा सकते हैं।

◇ ◇ ◇

यदि हमें नापतोल का ज्ञान न होता, तो हम एक जुगनू के सामने भी उतने ही आदर से खड़े होते, जैसा कि सूरज के सामने।

◇ ◇ ◇

कल्पनाहीन वैज्ञानिक एक ऐसे कसाई के समान है, जिसकी छूरियां और तराजू निकम्मी हो गई हैं।

पर हम क्या करें, क्योंकि हम सब शाकाहारी भी तो नहीं हैं।

◇ ◇ ◇

जब तुम गाते हो, तो एक भूखा आदमी अपने पेट से तुम्हारा गाना सुनेगा।

◇ ◇ ◇

मौत एक नवजात बच्चे की अपेक्षा एक बूढ़े के अधिक समीप नहीं है और यही हाल जीवन का है।

◇ ◇ ◇

यदि सचमुच तुम्हें स्पष्टवक्ता बनना ही है, तो स्पष्ट-वक्ता भी गुणपूर्वक बनो। नहीं तो चुप रहो, क्योंकि हमारे

पड़ोस में एक आदमी मृत्युशैया पर पड़ा है।

◇ ◇ ◇

हो सकता है कि इन्सानों के बीच की मौत देवताओं के बीच एक भोज बन रही हो।

◇ ◇ ◇

हो सकता है कि एक भूली हुई यथार्थता मर जाय, और वह सत्तर सहस्र वास्तविकताएं अपने पीछे इच्छा—वसीयत—में छोड़ जाए, जो इसकी अरथी और समाधि के निर्माण में खर्च की जाए।

◇ ◇ ◇

वास्तव में हम अपने आपसे ही बातचीत करते हैं, पर कभी-कभी हम जोर से बातचीत करते हैं कि दूसरे भी हमें सुन सकें।

◇ ◇ ◇

स्पष्ट वस्तु वही है जिसे कोई नहीं देखता, जब तक कि कोई उसे सरल भाषा में वर्णन नहीं करता।

◇ ◇ ◇

यदि आकाशगंगा मेरे अपने ही भीतर न होती, तो मैं उसे कैसे देख या पहचान सकता था?

◇ ◇ ◇

जब तक मैं वैद्यों में वैद्य न बनूं, वे यह विश्वास न करेंगे कि मैं ज्योतिषी भी हूं।

◇ ◇ ◇

शायद मोती सीपी में समुद्र का दृश्य है, और हीरा कोयले में समय की व्याख्या है।

◇ ◇ ◇

ख्याति लालसा की वह परछाईं है जो प्रकाश में खड़ी है।

◇ ◇ ◇

जड़ भी एक फूल ही है जो ख्याति को पसन्द नहीं करती।

◇ ◇ ◇

सौन्दर्य से अलग न तो धर्म ही कोई वस्तु है और न विज्ञान ही।

◇ ◇ ◇

मैं ऐसे किसी महापुरुष से परिचित नहीं, जिसके निर्माण में कोई साधारण बातें शामिल न हों। और ये साधारण बातें ही उनको निष्क्रियता, पागलपन और आत्मघात से रोके रखती हैं।

◇ ◇ ◇

यथार्थ में महापुरुष वह आदमी है, जो न दूसरों को अपने अधीन करता है और न स्वयं दूसरों के अधीन होता है।

◇ ◇ ◇

मैं यह विश्वास नहीं करता कि एक वैद्य केवल इसलिए अधकचरा या मध्यम श्रेणी का वैद्य है कि उसके हाथ से पागल भी मरते हैं और महापुरुष भी।

◇ ◇ ◇

सहनशीलता अहंकार के रोग के प्रेम में ग्रस्त है।

◇ ◇ ◇

कीड़े-मकोड़े धरती पर चल सकते हैं, पर क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हाथी भी आत्मसमर्पण कर दें ?

◇ ◇ ◇

दो बुद्धिमानों के बीच मतभेद होना शायद अत्यन्त साधारण बात हो सकती है।

◇ ◇ ◇

मैं स्वयं ही चिंगारी हूं और मैं ही सूखी घासफूस हूं। इस तरह मेरा ही एक भाग दूसरे भाग को जला रहा है।

◇ ◇ ◇

हम सब पवित्र पर्वत के शिखर पर चढ़ना चाहते हैं। तो फिर यदि हम अतीत को अपना पथ-प्रदर्शक बनाने की बजाय उसे अपना चित्र--नकशा--बनायें तो क्या हमारा मार्ग सरल न बन जाएगा ?

◇ ◇ ◇

✓ बुद्धिमत्ता जब इतनी घमंडी बन जाए कि वह रो न सके, इतनी गम्भीर बन जाए कि हंस न सके, और इतनी आत्म-केन्द्रित बन जाए कि सिवा अपने किसी दूसरे की चिन्ता भी न करे, तो वह बुद्धिमत्ता बुद्धिमत्ता नहीं रहती।

◇ ◇ ◇

यदि मैं अपने आपको उन सब बातों से भर लूं, जिन्हें तुम जानते हो, तो बताओ कि जिन बातों को तुम नहीं जानते उन्हें रखने के लिए मेरे पास क्या स्थान रहेगा ?

◇ ◇ ◇

मैंने बातूनियों से मौन, असहनशीलों से सहिष्णुता और निर्दयियों से दया सीखी है। फिर यह कितनी विचित्र बात है कि मैं इन गुरुओं में से किसीका आभारी नहीं ?

◇ ◇ ◇

एक कट्टर पंथी, एक निपट बहरा वक्ता है।

◇ ◇ ◇

ईर्ष्यालुओं का मौन अत्यंत शोर करनेवाला होता है।

◇ ◇ ◇

जब तुम जानने योग्य सब बातों को जान चुके होते हो, तब तुम अनुभव करने योग्य बातों के द्वार तक पहुंचते हो।

◇ ◇ ◇

अतिशयोक्ति एक ऐसी यथार्थता है, जो अपने आपे से बाहर हो गई है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम केवल उन ही बातों को देखते हो, जिन्हें प्रकाश प्रत्यक्ष करता है और जिन्हें वाणी घोषित करती है, तो वास्तव में न तो तुम देखते हो और न सुनते हो।

◇ ◇ ◇

वास्तविकता एक खुली सच्चाई है।

◇ ◇ ◇

तुम एक ही समय में हंसमुख और निर्दयी दोनों नहीं बन सकते।

◇ ◇ ◇

मेरे हृदय के सबसे समीप वह राजा है, जिसका राज्य न हो और वह निर्धन है, जो मांगना न जानता हो।

◇ ◇ ◇

निर्लज्ज सफलता से एक लज्जापूर्ण असफलता अधिक अच्छी है।

◇ ◇ ◇

तुम जहां से चाहो धरती खोद लो, तुम अवश्य ही खजाना पा लोगे, पर शर्त यह है कि तुममें एक किसान-सा दृढ़ विश्वास होना चाहिए।

◇ ◇ ◇

बीस घुड़सवार शिकारी बीस कुत्तों के साथ एक लोमड़ी का पीछा कर रहे थे। तब लोमड़ी ने कहा, "निस्सन्देह थोड़ी देर में ये मुझे मार डालेंगे। पर ये लोग भी कितने क्षुद्र और मूर्ख हैं! बीस लोमड़ियां गधों पर चढ़कर और बीस भेड़ियों को लेकर एक आदमी को मारने के लिए कभी उसका पीछा करना उचित नहीं समझेंगी।"

◇ ◇ ◇

हमारे बनाए हुए कानूनों के सामने हमारी बुद्धि झुक सकती है, आत्मा नहीं।

◇ ◇ ◇

मैं एक यात्री भी हूं और माझी भी। हर दिन मैं अपनी आत्मा में नया प्रदेश खोज लेता हूं।

◇ ◇ ◇

एक स्त्री ने कहा, "निस्सन्देह यह एक धर्मयुद्ध था। मेरा बेटा तो इसीमें मरा है।"

◇ ◇ ◇

मैंने एक बार जीवन से कहा, "मैं मौत को बोलते हुए सुनना चाहता हूं।"

और जीवन ने अपनी आवाज कुछ ऊंची करके कहा, "लो, अब तुम मौत की आवाज सुन रहे हो।"

◇ ◇ ◇

जब तुम जीवन की सब समस्याओं को हल कर चुकते हो

और उसके सब रहस्यों को पा लेते हो, तब तुम मौत की इच्छा करते हो, क्योंकि यह भी जीवन के रहस्यों का एक दूसरा रहस्य है।

◇ ◇ ◇

जन्म और मौत वीरता की दो कुलीनतम अभिव्यक्तियां हैं।

◇ ◇ ◇

मेरे मित्र ! हम दोनों जीवन से अपरिचित रहेंगे, यहां तक कि आपस में और अपने से भी। पर यह बात उसी दिन तक रहेगी, जब तक मैं तुम्हारी आवाज को अपनी ही आवाज समझकर न सुनूंगा। और उस समय जब मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूंगा, तो यह मालूम होगा कि मानो मैं दर्पण के सामने खड़ा हूं।

◇ ◇ ◇

लोग मुझसे कहते हैं, "यदि तुम अपने आपको पहचान लो, तो सब आदमियों को पहचान लोगे।"

और मैं उनसे कहता हूं, "जब तक मैं सब आदमियों को न पहचान लूं, मैं अपने आपको नहीं जान सकता।"

◇ ◇ ◇

इन्सान का एक नहीं दो रूप हैं, एक अंधकार में जागता है, और दूसरा प्रकाश में सोता है।

◇ ◇ ◇

एक सच्चा साधु वह है, जो संसार का इसलिए त्याग कर देता है कि वह संसार का पूर्ण रूप से निर्विघ्न हो आनन्द भोग सके।

◇ ◇ ◇

विद्वान और कवि के सामने एक हरियाला मैदान है ।

यदि विद्वान इसे पार कर लेगा, तो वह बुद्धिमान आदमी बन जाएगा ।

और यदि कवि इसको तय कर लेगा, तो वह सिद्ध बन जाएगा ।

  

कल मैंने दार्शनिकों का एक झुंड मंडी में देखा। वे अपने सिर टोकरों में ले जा रहे थे और आवाज लगा रहे थे, "बुद्धि लो, बुद्धि ।"

आह, बेचारे दार्शनिक ! इन्हें भी अपना पेट पालने के लिए अपनी बुद्धि बेचनी पड़ती है ।

एक दार्शनिक ने सड़क के भंगी से कहा, "मुझे तुझपर बड़ा तरस आता है कि तुम्हारा काम बड़ा कठोर और गंदा है ।"

भंगी ने कहा, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ! पर यह तो बताने की कृपा कीजिए कि आपका क्या काम है ?"

दार्शनिक ने बड़े गर्व से उत्तर दिया, "मैं इन्सान के मन, कामों और इच्छाओं का अध्ययन करता हूं ।"

भंगी ने झाड़ू देना आरम्भ कर दिया और मुस्कराते हुए कहने लगा, "मुझे भी तुमपर बड़ा तरस आता है ।"

  

सत्य को सुननेवाला सत्य बोलनेवाले से कुछ कम नहीं है ।

  

आवश्यक वस्तुओं और भोग-विलास की वस्तुओं में विवेक करना हर एक के बस की बात नहीं है। यह काम केवल देवता ही कर सकते हैं, क्योंकि वे बुद्धिमान और विचारवान हैं।

और शायद देवता ही आकाश में हमारे श्रेष्ठ विचार हैं।

◇ ◇ ◇

राजाओं का राजा वह है, जिसकी गद्दी साधुओं के हृदय में होती है।

◇ ◇ ◇

दानशीलता यह है कि अपनी सामर्थ्य से अधिक दो। और स्वाभिमान यह है कि अपनी आवश्यकता से कम लो।

◇ ◇ ◇

वास्तव में तुम एक वस्तु के लिए किसी एक आदमी के ऋणी नहीं हो, वरन सब वस्तुओं के लिए सब आदमियों के ऋणी हो।

◇ ◇ ◇

अतीत में होनेवाले सभी प्राणी आज भी हमारे साथ जीवन बिता रहे हैं।

तो फिर निस्सन्देह हममें से कोई भी अकृपालु मेजबान (अतिथि-सत्कार करनेवाला) बनना न चाहेगा।

◇ ◇ ◇

अधिक इच्छाओंवाला दीर्घजीवी होता है।

◇ ◇ ◇

लोग मुझसे कहते हैं, "हाथ में हो तो एक भी चिड़िया अच्छी है और वृक्ष पर हों तो दस भी कुछ नहीं।"

पर मैं कहता हूं, "झाड़ी की एक चिड़िया और उसका

पंख हाथ की दस चिड़ियों से अधिक अच्छे हैं।"

तुम्हारा उस पंख को खोजना ही एक ऐसा जीवन है, जिसके गतिशील पांव हैं। नहीं, नहीं, जीवन ही यह है।

◇ ◇ ◇

संसार में केवल दो तत्व हैं।

एक सौन्दर्य और दूसरा सत्य।

सौन्दर्य प्रेम करनेवालों के हृदय में है और सत्य किसान की भुजाओं में।

◇ ◇ ◇

महान सौन्दर्य मुझे अपना गुलाम बना लेता है।

पर उससे भी बड़ा सौन्दर्य मुझे स्वयं अपने बन्धन से भी स्वतन्त्र कर देता है।

◇ ◇ ◇

सौन्दर्य देखनेवाले की आंखों की अपेक्षा उसको चाहनेवाले के हृदय में अधिक चमकता है।

◇ ◇ ◇

मैं उस आदमी की प्रशंसा करता हूं, जो अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें मुझे सुनाता है। मैं उस आदमी का आदर करता हूं, जो अपनी कल्पनाओं के स्वप्न मेरे सामने खोल देता है। पर मैं उस आदमी के सामने झिझक और कुछ-कुछ लज्जा भी अनुभव करता हूं, जो मेरी सेवा करता है।

◇ ◇ ◇

प्राचीन काल में गुणी लोग राजाओं की सेवा करने में गौरव अनुभव करते थे।

पर आज वे निर्धनों की सेवा करने में सम्मान का दावा करते हैं।

◇ ◇ ◇

देवता जानते हैं कि बहुत-से व्यावहारिक आदमी मधुर स्वप्नों के संसार में खोए हुए कल्पनाशील लोगों की गाढ़ी कमाई से रोटी खाते हैं।

◇ ◇ ◇

बुद्धिमत्ता प्रायः एक परदा होता है। यदि तुम इसे फाड़ सको, तो उसके पीछे या तो तुम एक क्रुद्ध कल्पना-शक्ति पाओगे, या मायाचारपूर्ण चतुराई।

◇ ◇ ◇

एक समझदार आदमी मुझे बुद्धिमान समझता है और एक मंदबुद्धि मुझे मूर्ख समझता है। पर मुझे ऐसा मालूम होता है कि वे दोनों ही ठीक हैं।

◇ ◇ ◇

केवल वही आदमी हमारे हृदयों के रहस्यों को समझ सकते हैं, जिनके अपने हृदय रहस्यों से पूर्ण हैं।

◇ ◇ ◇

जो आदमी तुम्हारे सुखों में शामिल होता है, पर दुखों में तुम्हारा साथ नहीं देता, वह स्वर्ग के सात द्वारों में से एक की कुंजी खो बैठेगा।

◇ ◇ ◇

हां, संसार में निर्वाण है। वह अपनी भेड़ों को हरे-भरे मैदानों में चराने, अपने बच्चों को लोरियां देकर सुलाने और अपनी कविता की अंतिम पंक्ति लिखने में है।

◇ ◇ ◇

हम अपने हर्षों और शोकों को उन्हें अनुभव करने से बहुत पहले चुन लेते हैं।

◇ ◇ ◇

शोक दो उद्यानों—सुखों—के बीच एक दीवार है।

◇ ◇ ◇

जब तुम्हारा सुख या दुःख बहुत बढ़ जाता है, तो संसार तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ बन जाता है।

◇ ◇ ◇

इच्छा आधा जीवन है।

और उदासीनता आधी मौत।

◇ ◇ ◇

हमारे आज के दुःखों में अत्यंत कड़वी वस्तु हमारे भोगे हुए सुखों की याद है।

लोग मुझसे कहते हैं, "या तो तुम इस संसार के सुखों को चुन लो या परलोक की शांति को।"

और मैं उनसे कहता हूं, "मैंने इस संसार के आनन्दों को भी चुना है और परलोक की शांति को भी, क्योंकि मैं अपने हृदय में अनुभव करता हूं कि महाकवि परमात्मा ने केवल एक ही कविता लिखी है, जिसकी मात्राएं भी पूर्ण हैं और अनुप्रास भी ठीक है।"

◇ ◇ ◇

श्रद्धा हृदय के मरुस्थल में वह हरियाला क्षेत्र है जहां विचार का काफिला नहीं पहुंच सकता।

◇ ◇ ◇

जब तुम महानता को प्राप्त कर लोगे, तो तुम्हारे मन में एक ही इच्छा रहेगी, तुम एक ही चीज के भूखे होगे और तुम्हें एक ही तृष्णा होगी।

◇ ◇ ◇

यदि तुम अपने हृदय की गुप्त बातों को हवा पर प्रकट कर दो, फिर यदि हवा उन्हें वृक्षों को बता दे, तो तुम्हें हवा को भला-बुरा न कहना चाहिए।

◇ ◇ ◇

वसंत के फूल शीत ऋतु के स्वप्न हैं, जिनका वर्णन देवताओं के कलेवे के समय किया जाता है।

◇ ◇ ◇

एक मांसभक्षी पशु ने कमल से कहा, "देखो, मैं कितना तेज दौड़ता हूं। और एक तुम हो कि न चल सकते हो और न रेंग सकते हो।"

कमल ने उत्तर दिया, "वाह रे बहुत दौड़नेवाले! कृपा करके तेजी से दौड़ो।"

◇ ◇ ◇

कछुए खरगोशों की अपेक्षा सड़कों को अधिक अच्छी तरह जानते हैं।

◇ ◇ ◇

यह कितनी विचित्र बात है कि बिना रीढ़ की हड्डीवाले प्राणियों के ही कठोरतम खोल होते हैं!

◇ ◇ ◇

बहुत अधिक बोलनेवाला बहुत कम समझ रखता है और

एक सुवक्ता और नीलाम की बोली देनेवाले में बहुत ही कम भेद होता है।

◇ ◇ ◇

इस बात के लिए परमात्मा का धन्यवाद करो कि तुम अपने बाप की ख्याति या अपने चचा की सम्पत्ति पर जीवन नहीं बीता रहे हो।

और इससे भी अधिक धन्यवाद इसलिए करो कि तुम्हारी ख्याति या सम्पत्ति पर जीवन बितानेवाला कोई न होगा।

◇ ◇ ◇

जब एक बाजीगर गेंद को पकड़ने में असफल होता है, तभी वह मेरे सामने मांगने आता है।

◇ ◇ ◇

ईर्ष्यालु आदमी अनजान रूप से मेरी ही बड़ाई करता है।

◇ ◇ ◇

बहुत समय तक तुम अपनी मां की नींद में एक स्वप्न बनकर रहे और जब उसकी आंख खुली तो तुम्हारा जन्म हुआ।

◇ ◇ ◇

जाति की उत्पत्ति का कारण तुम्हारी मां की इच्छा में है।

◇ ◇ ◇

मेरे मां-बाप ने एक बालक की इच्छा की और उन्होंने मुझे जन्म दे दिया। और मैंने अपने लिए मां-बाप को चाहा और मैंने रात और समुद्र को जन्म दे दिया।

हमारे कुछ बच्चे हमारे ठीक काम हैं, पर कुछ बच्चे तो केवल हमारे पछतावे ही हैं।

◇ ◇ ◇

जब रात आए और तुम भी अंधकारमय हो, तो अपने बिछौने पर लेट जाओ और स्वेच्छा से अंधकारमय बन जाओ।

और जब दिन निकले और तुम इसी तरह अन्धकारमय हो, तो उठ बैठो और दृढ़ संकल्प के साथ दिन से कहो, "मैं अब भी अन्धकारमय हूं।"

दिन और रात के साथ खेल खेलना मूर्खता है।

यदि तुम ऐसा करोगे, तो वे दोनों तुमपर हंसेंगे।

◇ ◇ ◇

कुहरे से ढका हुआ पर्वत पहाड़ी नहीं है। और वर्षा में खड़ा हुआ बलूत का वृक्ष रोता हुआ बेत का वृक्ष नहीं है।

◇ ◇ ◇

लो, मैं तुम्हें एक पहेली सुनाता हूं। गहरा और ऊंचा एक दूसरे के इस वस्तु की अपेक्षा अधिक समीप है जो कि इन दोनों के बीच में है।

◇ ◇ ◇

जब मैं एक स्वच्छ दर्पण के रूप में तुम्हारे सामने खड़ा हुआ, तो तुम मुझे देर तक देखते रहे और तुमने अपना प्रतिबिम्ब उसमें देखा।

फिर तुमने मुझसे कहा, "मैं तुम से प्रेम करता हूं।"

पर वास्तव में तुमने मुझमें स्वयं अपनेसे ही प्रेम किया।

◇ ◇ ◇

जब तुम्हें अपने पड़ोसी के प्रेम में आनन्द आने लगता है, तब वह गुण नहीं रहता।

◇ ◇ ◇

जो प्रेम सदा उमड़ता नहीं रहता, वह सदा कम होता रहता है ।

◇ ◇ ◇

तुम एक ही समय में जवानी और उसके ज्ञान के स्वामी नहीं बन सकते । क्योंकि जवानी को अपने आनन्द-मंगल से इतना अवकाश कहां कि वह कुछ जाने ।

और ज्ञान अपने आपको खोजने में ही इतना सलंग्न है कि उसे जीवित रहने का ही अवकाश नहीं है ।

◇ ◇ ◇

तुम अपने घर की खिड़की के पास बैठकर नीचे सड़क पर जानेवालों को देख सकते हो । सड़क पर चलनेवालों में तुम्हें एक साध्वी दायें हाथ को जाती हुई दिखाई देती है और एक वेश्या बायें हाथ को जाती हुई ।

और तुम अपने भोलेपन और सरलता में अपने हृदय में कह सकते हो, "यह साध्वी कितनी उत्तम और पुण्यवान है और यह वेश्या कितनी अधम और पतित है !"

पर यदि तुम अपनी आंखें बन्द कर लो और कुछ देर कान लगाकर सुनो तो तुम्हें आकाश में यह वाणी गूंजती हुई सुनाई देगी, "एक मुझे प्रार्थना से खोजती है और दूसरी दुःख और कष्ट से बुलाती है और इन दोनों में से हर एक की आत्मा में मेरी आत्मा के लिए आश्रय है ।"

◇ ◇ ◇

हर सौ वर्ष में एक बार लेबनान की पहाड़ियों के बीच बाग में नासिरियों का ईसा क्रिश्चियनों के ईसा से मिलता है । वे दोनों देर तक आपस में बातें करते हैं और हर बार

नासिरियों का ईसा क्रिश्चियनों के ईसा से यह कहकर चला जाता है, "मेरे मित्र ! मुझे डर है कि हम दोनों कभी भी आपस में सहमत नहीं होंगे।"

◊ ◊ ◊

हे परमात्मा ! अत्यन्त धन-दौलतवालों की तृष्णा पूरी कर दे !

◊ ◊ ◊

हर महापुरुष के दो हृदय होते हैं; एक दूसरों के दुःख से घायल है और दूसरा क्षमा करता है।

◊ ◊ ◊

जब एक इंसान ऐसा झूठ बोलता है, जो न तुम्हें हानि पहुंचाता है और न किसी दूसरे को, तो तुम अपने मन में यह क्यों नहीं कहते कि इसकी वास्तविकताओं का घर इसकी कल्पनाओं के लिए इतना छोटा है कि उसे बड़े स्थान के लिए उस घर को छोड़ना पड़ा है।

◊ ◊ ◊

हर बन्द द्वार के पीछे एक रहस्य है, जिसपर सात मुहरें लगी हैं।

◊ ◊ ◊

प्रतीक्षा समय के खुर है।

◊ ◊ ◊

तुम्हें क्या चिन्ता है, यदि तुम्हारे घर की पूरबी दीवार में कष्ट रूपी नई खिड़की है ?

◊ ◊ ◊

जिसके साथ तुम हंसे हो, उसे भूल सकते हो, पर जिसके

साथ तुम रोए हो, उसे कभी नहीं भूल सकते ।

◇　　　◇　　　◇

निस्संदेह नमक में एक विलक्षण पवित्रता है । इसीलिए वह हमारे आंसुओं में भी है और समुद्र में भी ।

◇　　　◇　　　◇

हमारा परमात्मा अपनी दयापूर्ण तृष्णा में हम सबको स्वीकार कर लेगा, ओसकण को भी और आंसू की बूंद को भी ।

◇　　　◇　　　◇

तुम अपनी देवकाय आत्मा के एक अंशमात्र हो; तुम्हारा मुंह रोटी मांग रहा है और अंधा हाथ प्यासे होंठों से लगाने के लिए प्याला लिए हुए है ।

◇　　　◇　　　◇

यदि तुम अपने जाति, देश और व्यक्तिगत पक्षपातों से जरा ऊंचे उठ जाओ, तो निस्संदेह तुम देवता के समान बन जाओ ।

◇　　　◇　　　◇

यदि मैं तुम्हारे स्थान पर हूं, तो चढ़ाव के समय मैं समुद्र को भला-बुरा न कहूंगा ।

जहाज भी अच्छा है और उसका कप्तान भी कुशल है । पर भय और चिन्ता का तूफान तो स्वयं तेरे अपने मन में है ।

◇　　　◇　　　◇

जिसकी हमें इच्छा है और जिसे हम प्राप्त नहीं कर सकते, वह हमें उसकी अपेक्षा अधिक प्यारी है, जो हमें प्राप्त है ।

  

यदि तुम बादल पर बैठ जाओ, तो तुम्हें न तो दो देशों के बीच सीमा दिखेगी और न दो खेतों के बीच सीमा-पत्थर ।

पर खेद तो यही है कि तुम बादल पर बैठ नहीं सकते ।

  

सात शताब्दियां हुईं, एक गहरी घाटी से सात धौले कबूतर उड़कर हिमाच्छादित पर्वत-शिखर पर गए । तो जो सात आदमी उनकी उड़ान देख रहे थे, उनमें से एक ने कहा, "मुझे सातवें कबूतर के पंख पर एक काला धब्बा दिखाई देता है ।"

आज उसी घाटी में लोग सात काले कबूतरों की कथा कहते हैं, जो हिमाच्छादित पर्वत-शिखर की ओर उड़कर गए थे ।

  

पतझड़ की ऋतु में मैंने अपने सारे शोक-संतापों को इकट्ठा करके अपने बाग में गाड़ दिया । जब अप्रैल महीना आया और वसन्तऋतु पृथ्वी से विवाह करने आई, तो मेरे बाग में उगनेवाले फूल दूसरों के बागों के फूलों से बहुत सुन्दर और भिन्न थे ।

मेरे पड़ोसी मेरे फूलों को देखने आए और सबने मुझसे कहा, "अब की बार जब पतझड़ऋतु में बीज बोने का समय आए, तो क्या इन फूलों के थोड़े-से बीज हमें भी न दोगे ? हम भी उन्हें अपने बागों में बोएंगे ।"

◇ ◇ ◇

निस्संदेह यहदुर्भाग्य है कि मैं अपना खाली हाथ लोगों की ओर बढ़ाऊं और कोई उसमें कुछ न दे।

पर यह बड़ी निराशा की बात है कि मैं अपना भरा हुआ हाथ लोगों की ओर बढ़ाऊं और कोई भी लेनेवाला न मिले।

◇ ◇ ◇

मुझे अनन्त में जाने की तीव्र इच्छा है, क्योंकि वहां ही मैं अपनी अनलिखी कविताओं और अचित्रित चित्रों को पाऊंगा।

◇ ◇ ◇

प्रकृति और परमात्मा के बीच कला एक सीढ़ी है।

◇ ◇ ◇

धुन्धली कल्पना को मूर्तिमान कर देने का नाम ही कला है।

◇ ◇ ◇

कांटों के ताज बनानेवाले हाथ भी आलसी हाथों से अच्छे हैं।

◇ ◇ ◇

हमारे पवित्रतम आंसू कभी हमारी आंखों की बाट नहीं देखते।

◇ ◇ ◇

हर इन्सान उस प्रत्येक राजा और दास का वंशज है, जो इस संसार में हुए हैं।

◇ ◇ ◇

यदि ईसामसीह का परदादा उसके अपने भीतर छुपे जीव को जानता तो क्या वह अपने आपसे ही भयभीत न हो जाता ?

◇ ◇ ◇

जितना प्रेम मरियम को अपने बेटे ईसा से था, क्या ज्यूडस* की मां को अपने बेटे से उससे कुछ कम प्रेम था ?

◇ ◇ ◇

हमारे भाई ईसामसीह में नीचे लिखी तीन चमत्कारपूर्ण बातें हैं, जिनका पुस्तकों में उल्लेख नहीं है—

(१) वह मेरे और तुम्हारे जैसा ही एक आदमी था।

(२) उसमें भी प्रसन्नता की भावना थी।

(३) वह जानता था कि वह विजेता है, यद्यपि वह स्वयं पराजित हो चुका था।

◇ ◇ ◇

हे सूली पर चढ़ाए जानेवाले ! तुझे मेरे ही हृदय पर सूली दी गई है और जो कीलें तेरी हथेलियों में ठोकी गई हैं, वे मेरे हृदय की दीवारों में चुभ रही हैं।

जब कल कोई अजनबी आदमी यहां से गुजरेगा, तो वह यह नहीं समझेगा कि यहां दो आदमियों का खून बह रहा है। वह तो एक ही आदमी का खून समझेगा।

◇ ◇ ◇

---

*ज्यूडस ईसामसीह का एक शिष्य था, जो उससे विश्वासघात करने के कारण बदनाम है।

शायद आपने पवित्र पर्वत का नाम सुना होगा।

संसार में वह सबसे ऊंचा पर्वत है। यदि तुम उसकी चोटी पर पहुंच जाओ, तो तुम्हारे हृदय में केवल एक ही इच्छा रहेगी कि नीचे उतरकर अत्यन्त नीची घाटी में रहने-वालों के साथ रहूं।

इसीलिए इसको पवित्रतम पर्वत कहते हैं।

  

जिन विचारों को मैंने इन सूक्तियों में बन्द किया है, उन्हें मुझे अपने कामों के द्वारा स्वतंत्र करना चाहिए।



मान्यताएं

[खलील जिब्रान के कुछ विचार]

१. नश्तर

"वह अपने सिद्धान्तों में पागलपन की हद तक उग्रवादी है।"

"वह भावुक है और जो कुछ लिखता है वह प्रचलित रीति-रिवाजों में विषमता पैदा कराने के लिए लिखता है।"

"अगर विवाहित और अविवाहित स्त्री-पुरुष विवाह के मामले में जिब्रान की राय पर चलें तो सामाजिक जीवन की व्यवस्था बिगड़ जाएगी, समाज की नींव टूट जाएगी और यह संसार एक नर्क और इसमें रहनेवाले शैतान बन जाएंगे।"

"उसके लेखों के सौंदर्य के धोखे से बचो, क्योंकि वह मानवता का शत्रु है।"

"वह आतंकवादी, अनीश्वरवादी और धर्महीन है। हम पवित्र लेबनान पर्वत के निवासियों को सीख देते हैं कि वे उसके विश्वासों को ठुकरा दें, उसकी रचनाओं को आग में फूंक दें, वरना कहीं ऐसा न हो कि उसके धर्महीन दृष्टिकोणों का कोई कुप्रभाव हृदयों पर बाकी रह जाए।"

"हमने उसके उपन्यास 'टूटे हुए पर' को पढ़ा और उसे विष मिला पानी पाया।"

  

ऊपर उन विचारों के चंद ऐसे नमूने दिए गए हैं जो लोगों ने मेरे बारे में जाहिर किए हैं। यह सच है कि मैं पागलपन की हद तक उग्रवादी हूं, और रचना के मुकाबले में संहार की तरफ झुकाव रखता हूं। मेरा दिल उन बातों से घृणा करता है, जिनका संसार आदर करता है। मैं उन बातों से प्रेम करता हूं, जिन्हें संसार ठुकराता है। और अगर आदमी के विश्वास, रीति-रिवाज और उसकी आदतों को उखाड़ फेंकना मेरे बस में होता, तो मैं एक क्षण की भी देर न करता। पर कुछ लोगों का यह कहना कि मेरी रचनाएं 'विष मिला पानी' हैं, एक ऐसी बात है, जो सच बात को जाहिर तो करती है, पर मोटे परदे के पीछे से। नग्न सत्य तो यह है कि मैं जहर को पानी में मिलाकर नहीं, शुद्ध रूप में प्यालों में उंड़ेलता हूं। हां, इतनी बात जरूर है कि जिन प्यालों में उंड़ेलता हूं, वे हद दर्जे के साफ और पारदर्शक होते हैं।

रहे वे महानुभाव, जो दिल से मेरे लिए यह आपत्ति पेश करते हैं कि वह भावुक है और बादलों की दुनिया में उड़ता रहता है। सो, ये वे लोग हैं जो उन पारदर्शक प्यालों की चमक पर अपनी निगाहें जमा देते हैं और उस शराब से आंख फेर लेते हैं, जो उन प्यालों में होती है और जिसे वे 'विष' कहते हैं, क्योंकि उनके कमजोर पेट उसे पचा नहीं सकते।

यह भूमिका एक अक्खड़ प्रकार की धृष्टता सूचित करती है, परन्तु क्या गुस्ताखी का अक्खड़पन मायाचार और धूर्तता की नरमी से अच्छा नहीं है ? गुस्ताखी स्वयं को अपने असली रूप में जाहिर करती है, परन्तु मायाचार मांगे वस्त्र पहन कर हमारे सामने आता है ।

◇ ◇ ◇

पूर्व के लोग चाहते हैं कि साहित्यकार उस मधुमक्खी के समान हो जाएं, जो छत्ता बनाने के लिए बागों में फूलों का रस इकट्ठी करती फिरती है ।

पूर्ववाले मधु पर जान देते हैं और इसके सिवा उन्हें कोई खाना नहीं भाता । उन्होंने इस अधिकता से मधु का इस्तेमाल किया है कि वे स्वयं मधु बनकर रह गए हैं, जो आग के सामने पिघल जाता है और उस वक्त तक नहीं जमता जब तक उसे बर्फ पर न रखा जाए ।

पूर्ववाले चाहते हैं कि कवि उनके बादशाहों, राजों-महाराजों, शासकों और धर्माचार्यों के सामने अपनी आत्मा को धूप और लोबान की तरह सुलगाएं । यद्यपि पूर्वी देशों का वायुमंडल दरबारों, बलिवेदियों और समाधियों में सुलगी हुई धूप और लोबान के सुगन्धित धूएं से अट गया है; पर वह अब भी संतुष्ट नहीं है । यही कारण है कि इस युग में एक से एक बढ़कर प्रशंसक कवि, शोक-कविता लिखनेवाले और बड़े से बड़े सजीले भांड पाए जाते हैं ।

पूर्वी देशोंवाले चाहते हैं कि विचारक विद्वान् प्राचीन कवियों की कविताएं दुहराते रहें और अपने लेखों में मूर्खों-

वाले उपदेश, निरर्थक बातें और उन वाक्यों और व्यवस्थाओं की सीमा से आगे न बढ़ें, जिनपर चलकर आदमी का जीवन उस क्षुद्र घासफूस के समान हो जाता है, जो छाया में उगे हो, और उसकी अन्तरात्मा उस कुनकुने पानी के समान हो जाती है, जिसमें थोड़ी-सी अफीम मिली रहती है।

कहने का सार यह है कि पूर्वी देशोंवाले बीते हुए युग के पवित्र स्थानों में जीवन बिताते हैं, और झूठी तसल्लियां देनेवाली और हंसी पैदा करनेवाली लज्जापूर्ण बातों से दिलचस्पी रखते हैं, पर उन त्यागपूर्ण और निश्चित सिद्धान्तों से दूर भागते हैं, जो डंक मारते हैं और उन्हें झूठे सुख-चैन की गहरी नींद से जगा देते हैं।

  

पूर्वी देश बीमार हैं। उन्हें सदा लगी रहनेवाली बीमारियों और लगातार दवाओं ने इतना ग्रस रखा है कि वे बीमारी का अभ्यस्त और तकलीफ से परिचित होकर अपने दुःख-दर्द को स्वाभाविक गुण ही नहीं, बल्कि एक ऐसा सुन्दर और अच्छा स्वभाव समझने लगे हैं, जो स्वस्थ शरीर और महान् आत्मा के लिए खास तौर से नियत है। इन आदमियों की निगाह में वे सब आदमी त्रुटिपूर्ण और प्रकृति के वरदानों और बड़े-बड़े चमत्कारों से खाली हैं जो उन बीमारियों और तकलीफों से बचे हुए हैं।

पूर्वी देशों में बहुत-से हकीम हैं, जो उनकी नाड़ी देखते हैं और उनके रोग के विषय में आपस में सलाह-मशविरा

करते हैं, लेकिन जब इलाज की नौबत आती है, तो वही तेज और नशा लानेवाली औषधियां देते हैं, जो रोग की मुद्दत तो बढ़ा देती हैं, पर उसे जड़ से दूर नहीं करतीं।

इन सुन्न करनेवाली औषधियों के बहुत-से भेद हैं, और उनके बहुत से रूप हैं। और ये एक दूसरे से इस तरह पैदा होती हैं, जिस तरह एक बीमारी से दूसरी बीमारी और एक मुसीबत से दूसरी मुसीबत पैदा होती है। इसलिए पूर्व में जब कोई नया रोग प्रकट होता है, उसके लिए पूर्व के हकीम-वैद्य कोई सुन्न करनेवाली किसी नई औषधि का आविष्कार करते हैं।

परन्तु वे कारण, जिनके परिणामस्वरूप इन सुन्न करनेवाली औषधियों का आविष्कार किया जाता है, अनगिनत हैं। इनमें सबसे बड़ा कारण है, बीमार का भाग्य और कर्म-फल के प्रसिद्ध सिद्धान्त पर विश्वास करना और हकीमों की बुजदिली और उस अवस्था की तीव्रता से भय खाना, जिसे हरीभरी वादियां पैदा करती हैं।

अब मैं उन तसल्ली देनेवाली और सुन्न करनेवाली दवाइयों के भिन्न-भिन्न उदाहरण पेश करता हूं, जो पूर्व के हकीमों ने देश, धर्म और समाज से सम्बन्ध रखनेवाली बीमारियों के लिए आविष्कार किए हैं—

पति के दिल में पत्नी की तरफ से और पत्नी के दिल में पति की तरफ से कुछ असली और प्राकृतिक कारणों के आधार पर घृणा बैठ जाती है, और वे दोनों लड़भिड़ कर मार-पीट कर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। पर चौबीस

घंटे गुजरने नहीं पाते कि पुरुष के रिश्तेदार उसकी पत्नी के सम्बन्धियों के पास जाते हैं, कुछ देर तक चिकनी-चुपड़ी बातें होती रहती हैं और इसके बाद सब इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि पति-पत्नी में मेल करा दिया जाए। इसलिए ये आदमी स्त्री के पास आते हैं और सच्ची-झूठी सीखों से उसके भावों को लुभाते हैं, जो उसे लज्जित तो कर देती हैं, पर संतुष्ट नहीं कर सकतीं। इसके बाद पति को बुलाया जाता है और उसपर उन अच्छी-अच्छी बातों और ऊंचे-ऊंचे उदाहरणों की बौछार शुरू कर दी जाती है, जो उसके विचारों में नरमी तो पैदा कर देती हैं, लेकिन उन्हें बदल नहीं सकतीं। इस तरह जो पति-पत्नी मन से एक दूसरे को घृणा करते हैं, उनमें मेलजोल का पवित्र कर्तव्य पूरा कर दिया जाता है। अब वह पति-पत्नी अपनी इच्छा के विरुद्ध फिर एक जगह रहना शुरू कर देते हैं, यहां तक कि मुलम्मा उतर जाता है और उस सुन्न कर देनेवाली औषधि का असर खतम हो जाता है, जो सगे-सम्बन्धियों और उनके प्यारे आदमियों ने इस्तेमाल की थी; इसलिए पुरुष फिर अपनी घृणा और अप्रसन्नता जाहिर करने लगता है और स्त्री फिर अपने दुर्भाग्य का परदा फाड़ देना चाहती है। पर जिन लोगों ने पहले मेल-मिलाप कराया था, दुबारा वेही लोग यह महान् कर्तव्य पूरा करते हैं। जो मर्द-औरत सुन्न करनेवाली दवाई की एक बूंद पी लेते हैं, वे भरे-भरे गिलास पीने से भी इन्कार नहीं करते।

जनता अत्याचारी राज्य या पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करती है और सुधार-सभा की नींव रखकर उन्नति और

आजादी की तरफ कदम बढ़ाती है, गरमागरम व्याख्यान दिए जाते हैं, बेधड़क लेख लिखे जाते हैं, बजट बनाए जाते हैं और योजनाएं प्रकाशित होती हैं। शिष्टमंडल और प्रतिनिधि भेजे जाते हैं, पर एक या दो सप्ताह से ज्यादा नहीं गुजरने पाते कि हम सुनते हैं कि सरकार ने सभा के नेता को पकड़ लिया या उसका वजीफा अर्थात् मासिक वृत्ति नियत कर दी। इसके बाद सुधार-सभा के बारे में कुछ सुनने में नहीं आता, क्योंकि इसके सदस्य सुन्न करनेवाली औषधि की चंद बूंदें पीकर, फिर शांति और आज्ञापालन की तरफ दौड़ जाते हैं।

जनता अपने बुनियादी सिद्धान्तों को दृष्टि में रखकर अपने धर्मगुरु के विरुद्ध आवाज उठाती है, उसके व्यक्तित्व को अपनी समालोचना का निशाना बनाती है, उसके कामों पर नुकताचीनी करती है, उसके चाल-चलन को बुरा-भला कहती है और उसे एक ऐसे नए धर्म को स्वीकार कर लेने के डरावे देती है, जो बुद्धि में आने योग्य और अंधविश्वासों तथा दोषों से दूर होगा। पर अधिक समय नहीं गुजरता कि सुनने में आता है कि देश के बुद्धिमान लोगों ने धर्मगुरु और उसके अनुयायियों का आपसी विरोध दूर कर दिया है, और जादू के समान असर तथा सुन्न करनेवाली औषधियों के प्रभाव से गुरु का व्यक्तित्व वही आतंक व तेजपूर्ण दीखने लगता और अनुयायियों के दिलों में वे ही आज्ञा-पालन के अंधे भाव फिर पैदा हो जाते हैं।

यदि कमजोर और पीड़ित आदमी बलवान् अत्याचारी आदमी के अत्याचार की शिकायत करता है, तो पड़ोसी कहते हैं, "चुप रहो,

जो आंख तीर का मुकाबला करती है, वह फोड़ दी जाती है।"

यदि गांववाले पादरियों के प्रेम और संयम-त्याग के बारे में संदेह प्रकट करते हैं, तो उनके साथी कहते हैं, "चुप, धर्म-ग्रंथों में लिखा है कि उनकी बात सुनो, पर उनके आचरण और कामों का अनुकरण न करो।"

अगर शिष्य बड़े-बड़े वैयाकरणों के व्याकरण-सम्बन्धी तर्क तथा वाद-विवाद को याद करने से बचता है, तो अध्यापक कहता है, "सुस्त और आलसी लोगों ने अपने लिए ऐसे बहाने घड़ लिए हैं, जो पाप से भी ज्यादा घृणा के योग्य हैं।"

यदि नौजवान लड़की विधवाओं का-सा जीवन व्यतीत करने से बचती है, तो उसकी मां कहती है, "लड़की अपनी मां से श्रेष्ठ नहीं होती, इसलिए जिस रास्ते पर तेरी मां चली है, उसीपर तू भी चल।"

नौजवान लड़का व्यर्थ-के धार्मिक क्रियाकाण्ड और रिवाजों के बारे में प्रश्न करता है, तो पादरी उत्तर देता है, "जो कोई श्रद्धा और विश्वास की आंख से नहीं देखता, उसे दुनिया में अन्धकार के सिवा कुछ नजर नहीं आता।"

एक युग इसी तरह गुजर गया, पर पूर्वी देशों का आदमी अपने नरम और गुदगुदे बिस्तर में पड़ा सो रहा है। जब कभी उसे मच्छर काटते हैं, तो एक क्षण के लिए वह जाग उठता है और उसके बाद फिर इन सुन्न करनेवाली औषधियों के असर से सो जाता है, जो उसके शरीर की हर रग और उसके खून की हर बूंद में अपना काम कर रही है।

जब कोई आदमी खड़ा होकर सोनेवालों को पुकारता है,

उनके घरों, मन्दिरों और कचहरियों को अपनी ऊंची आवाजों से भरता है, तो वे अपनी घोर नींद से बोझल आंखें खोलते हैं और जंभाइयां ले-लेकर कहते हैं, "किस कदर बदतमीज है यह नौजवान कि न आप सोता है और न दूसरों को सोने देता है।"

इसके बाद वे अपनी आंखें फिर बन्द कर लेते हैं और अपनी आत्मा से कानाफूसी के तौर पर कहते हैं, "वह अनीश्वरवादी है, धर्महीन है, प्रचलित आचार व्यवहार में गड़बड़ करना चाहता है, राष्ट्र की बुनियादों को ढाता है और मानवता की छाती को अपने बारीक तीरों से छलनी करता है।"

  

जब मैं इन जाग्रत और बागी लोगों में था, जो नींद लानेवाली और सुन्न करनेवाली औषधियों को इस्तेमाल करने से इन्कार करते हैं, तो मैं प्रायः अपनी अंतरात्मा से प्रश्न करता था और मेरी अन्तरात्मा संदिग्ध और गोलमोल शब्दों में उत्तर देती थी। परन्तु जब मैंने सुना कि लोग मुझे धिक्कारते हैं और मेरे सिद्धान्तों और विचारों पर थू-थू करते हैं, तो मुझे अपनी जाग्रति की यथार्थता का विश्वास हो गया और मैंने जान लिया कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं, जो मधुर स्वप्नों और मनोहर विचारों के माननेवाले हैं, वरन् उन एकान्तवासियों में से हूं, जिनका जीवन उन तंग रास्तों में से जाता है, जिनपर फूल और कांटे बिछे हैं और जिनके चारों तरफ शिकारी भेड़िये और चहचहाती हुई बुलबुलें हैं।

अगर जाग्रति कोई गुण होता, तो मैं लज्जावश उसका

दावा करने से जरूर रुकता, पर वह कोई गुण नहीं है, बल्कि एक विचित्र और अनोखी वास्तविकता है, जो एकान्तवासी आदमियों पर असावधानी और बेखबरी की अवस्था में जाहिर होकर उनके आगे-आगे चलती है। और वे इन गुप्त तारों में बंधे और भयंकर उद्देश्यों पर निगाहें जमाए उसके साथ-साथ हो लेते हैं।

मेरे विचार में व्यक्तिगत सच बातों को प्रकट करने में लज्जा अनुभव करना मुलम्मा चढ़ी हुई मक्कारी और मायाचार है। इसे ढोंग भी कह सकते हैं, पर पूर्वी देशों के लोग इसे 'सभ्यता' के प्यारे नाम से पुकारते हैं।

◇ ◇ ◇

कल जब हमारे विचारशील साहित्यकार मेरे इन विचारों को पढ़ेंगे, तो घृणा और अप्रसन्नता के स्वर में कहेंगे :

"वह उग्रवादी है, जो जीवन के बुरे पहलू को देखता है और बुराई के सिवा उसे कुछ नजर नहीं आता। यही कारण है कि वह लगातार हमपर रो रहा है और बराबर हमारी दशा पर रो रहा है।"

मैं उन विचारशील साहित्यकारों के सामने निवेदन करता हूं, "मैं पूर्वी देशों पर रोता हूं क्योंकि मुरदे की लाश के सामने नाचना ऊंचे दरजे का पागलपन है।

"मैं पूर्वी देशों पर शोक करता हूं, क्योंकि बीमारियों पर हंसना निरी मूर्खता है। मैं उस प्यारे देश की शोक-कविता पढ़ता हूं, क्योंकि अंधी मुसीबत के सामने गाना कोरा अज्ञान है।

"मैं उग्रवादी हूं, क्योंकि जो कोई वास्तविकता को प्रकट

करने में नरमी से काम लेता है, वह उसके आधे हिस्से का वर्णन करता है और अन्तिम आधा कहनेवाले के उस भय में छुपा रह जाता है जो उसे लोगों के संदेहों और अनुमानों से होता है।

"मैं सड़ी हुई लाश देखता हूं, तो मेरा दिल इस कदर घृणा करता है और मेरी आत्मा इतनी बेचैन हो जाती है कि मैं उसके पास नहीं बैठ सकता, फिर चाहे मेरे दायें हाथ में अमृत का प्याला हो और बायें हाथ में मिठाई की तश्तरी। इस आधार पर अगर कोई मेरे रुदन को हंसी से, मेरी घृणा को प्रेम से और मेरी उग्रता को नरमी से बदलना चाहता है, तो मुझे पूर्वी लोगों में कोई ऐसा न्यायप्रिय शासक दिखाए, जो धर्म का पाबन्द हो और सही राह पर चलता हो, मुझे किसी ऐसे धर्माचार्य का पता दे, जिसके ज्ञान और आचरण में समानता हो और मुझे कोई ऐसा पति बताये, जो अपनी पत्नी को भी ऊंची आंख से देखता हो, जिस आंख से वह अपने आपको देखता है।

"अगर कोई यह चाहता है कि मुझे नाचता देखे या ढोल और बांसुरी बजाते सुने, तो उसे चाहिए कि मुझे विवाह के उत्सव पर बुलाए न कि कब्रिस्तान में खड़ा कर दे।"

२. प्रकृति की गोद में

भाग्य ने मुझे आजकल की तंग सभ्यता की दुःखपूर्ण धारा में बहाकर शीतल और हरेभरे कुंज में बैठी प्रकृति की गोद से उठाकर जनसमूह के पांव तले बुरी तरह पटक दिया। यहां मैं शहरी जीवन के कष्टों के एक दुःखी शिकार की तरह गिर पड़ा।

इससे बड़ा और कोई दंड ईश्वर की सन्तान को नहीं भुगतना पड़ा है। इससे बड़ा देश-निकला उस आदमी के भाग्य में भी नहीं लिखा गया है, जो भूमि पर पैदा होनेवाले घास के एक तिनके को इतने जोश से प्यार करता है, जो कि उसकी रग-रग को फड़का देता है। किसी अपराधी को दी जानेवाली कैद भी मेरी कैद के कष्ट की बराबरी नहीं कर सकती, क्योंकि मेरी कोठरी की तंग दीवारें मेरे हृदय को काट रही हैं।

धन-दौलत में हम शहरी लोग गांववालों से अधिक धनी भले ही हो सकते हैं, पर सच्चे जीवन की पूर्णता में वे हम से बहुत ज्यादा धनी हैं। हम बोते बहुत हैं, पर काटते कुछ

नहीं; पर वे उस समृद्धि का सुख भोगते हैं, जो कि प्रकृति ने ईश्वर की परिश्रमी सन्तान को पुरस्कार में दी है। हम हर एक लेनदेन का मक्कारी और धूर्तता से हिसाब लगाते हैं, पर वे प्रकृति की पैदावार को ईमानदारी और शांति से लेते हैं। हम उचाट नींद में सोते हैं और अगले दिन के चिन्तारूपी भूत को देखते रहते हैं। पर वे इस तरह सोते हैं, जैसे बच्चा अपनी मां की गोद में निश्चिन्त सोता है, क्योंकि वे जानते हैं कि प्रकृति अपनी नित्य की पैदावार उन्हें देने से इन्कार न करेगी।

हम लोभ के गुलाम हैं, वे संतोष के मालिक हैं। हम जीवन के प्याले से कटुता, निराशा, भय और थकावट पीते हैं, पर वे ईश्वर के आशीर्वादों का शुद्ध अमृत पीते हैं।

सौन्दर्य और शोभा प्रदान करनेवाले परमात्मा! आप मेरे लिए जनसमूह की इमारतों में मूर्तियों और चित्रों में छुपे हो। मेरी कैदी आत्मा की दुःखभरी आवाजें सुनो! मेरे फटते हुए हृदय की पुकारें सुनो! मुझपर दया करो। रास्ता भूले हुए अपने बच्चे को पर्वत के आंचल में ले चलो, वही मेरा मन्दिर है।

३. त्योहार की सन्ध्या

सन्ध्या हो गई और अंधेरा समस्त नगर पर छा गया : महलों, झोंपड़ियों और दुकानों में दीपक जगमगा उठे। जन-समूह त्योहार के सुन्दर-सुन्दर और नए-नए वस्त्र पहनकर सड़कों पर निकल पड़ा। उनके चेहरों पर उस आनंद, हर्ष और संतोष के सभी चिह्न थे, जो खुशी के त्योहारों पर होना चाहिए।

पर मैं इस सारी भीड़ और चीख-पुकार से परे हटकर दूर अकेला उस महापुरुष के व्यक्तित्व के बारे में सोचने लगा, जिसकी महानता की याद में यह त्योहार मनाया जा रहा था। मैं युगों पहले हुए उस प्रतिभाशाली महापुरुष के सम्बन्ध में सोच-विचार कर रहा था, जो दरिद्रता में पैदा हुआ, जिसने धर्माचरणयुक्त जीवन व्यतीत किया और जो अन्त में सूली पर चढ़ा दिया गया।

मैं उस जलती हुई मशाल के सम्बन्ध में सोच रहा था, जो शाम देश के इस एक छोटे-से गांव में उस परमात्मा ने प्रकाशित की, जो त्रिकालव्यापी है और जो अपने सत्य से एक

संस्कृति और सभ्यता से दूसरी संस्कृति और सभ्यता को पार करता रहता है।

सार्वजनिक बाग में पहुंचकर, मैं लकड़ी के एक साधारण बेंच पर बैठ गया। फिर मैं पुष्प-पत्रहीन वृक्षों में से भीड़ भरी सड़कों को देखने लगा। मैं उन गीतों और प्रार्थनाओं को सुनने लगा, जो स्त्री-पुरुष खुशी में गा रहे थे।

घंटे भर अपने विचारों में डूबा रहकर मैंने मुड़कर देखा तो अपने पास एक बूढ़े आदमी को बैठा देखकर चकित हो गया। उसके हाथ में एक टहनी थी, जिससे वह धरती पर सीधी-टेढ़ी लकीरें खींच रहा था। उसके आने और मेरे पास बैठने का मुझे कुछ भी पता न चला था। मैंने अपने मन में कहा, यह भी मेरे ही समान अकेला है। उसके चहरे को बड़े ध्यान से देखने के बाद मुझे ऐसा मालूम हुआ कि फटे-पुराने कपड़ों और लम्बी-लम्बी जटाओं के होते हुए भी वह कोई ऐसा प्रतिष्ठित और आदरणीय पुरुष है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि उसने मेरे मन के भावों को समझ लिया है, क्योंकि उसने गहरे और शांत स्वर में मेरा अभिवादन किया।

मैंने भी बड़े आदर से उत्तर में उसका अभिवादन किया। इसके बाद वह फिर धरती पर लकीरें खींचने लगा। उसका विचित्र और सुखदायक स्वर मेरे कानों में गूंज रहा था। मैंने फिर उससे पूछा, "क्या आप इस शहर में अजनबी और अपरिचित हैं?"

उसने उत्तर दिया, "हां, मैं इस शहर में ही क्या प्रत्येक शहर में अजनबी हूं।"

मैंने उसको ढाढ़स बंधाते हुए कहा, "एक अजनबी आदमी को यह भूल जाना चाहिए कि इन आनन्द के दिनों में वह एक अपरिचित है, क्योंकि इन दिनों में मनुष्यों के हृदयों में सहानुभूति और उदारता के भाव पैदा हो जाते हैं।" उदासीनता के भावों के साथ उसने कहा, "मैं और दिनों की अपेक्षा ऐसे दिनों में अपने आपको अधिक अजनबी पाता हूं।" यह बात कहकर उसने निर्मल आकाश की तरफ देखा। उसकी दृष्टि तारों से पार चली गई और उसके होंठ हिलने लगे, मानो वह आकाश में अपने दूरस्थ देश की प्रतिमूर्ति देख रहा है।

उसके विचित्र उत्तर ने मेरे मन में उत्सुकता पैदा कर दी। मैंने कहा, "वर्ष के ऐसे अवसरों पर मनुष्य दूसरों के प्रति अधिक दयालु होते हैं। धनवान निर्धनों का ध्यान रखते हैं। और बलवान दुर्बलों पर करुणा भाव रखते हैं।"

उसने कहा, "हां, पर धनवान की निर्धन पर क्षणिक दया कठोर होती है और बलवान की दुर्बल के प्रति सहानुभूति अपनी बड़ाई के प्रदर्शन के सिवा और कुछ भी नहीं है।"

मैंने उसकी हां में हां मिलाते हुए कहा, "आप सच कहते हैं, पर दुर्बल और निर्धन आदमी को क्या पड़ी कि वह यह जानने का प्रयत्न करे कि धनवानों के हृदयों में क्या भावना होती है और न भूखा यह सोचता है कि जो रोटी वह खा रहा है, उस-

का आटा किस तरह गूंधा जाता है और रोटी कैसे पकाई जाती है।"

उसने उत्तर दिया, "यह ठीक है कि लेनेवाला ये बातें नहीं सोचता, पर जो देता है, उसकी तो यह जिम्मेवारी है कि वह अपने आपको इस बात से सावधान रखे कि जो कुछ वह दे रहा है, वह अपनी मान-बड़ाई के लिए नहीं दे रहा है, वरन भ्रातृप्रेम और जनता की सहायता के लिए दे रहा है।"

मुझे उसकी बुद्धि पर आश्चर्य हुआ और मैं फिर उसकी वृद्ध आकृति और फटे-पुराने कपड़ों के सम्बन्ध में सोचने लगा। मैंने कुछ चेतन होकर कहा, "मालूम होता है कि आपको सहायता की आवश्यकता है। इसलिए क्या आप मुझसे रुपया-दो रुपए लेना स्वीकार करेंगे ?" दुःखपूर्ण मंद मुस्कान के साथ उसने कहा, "हां, मुझे आवश्यकता तो अवश्य है, पर रुपये-पैसे की नहीं।"

चकित होकर मैंने पूछा, "तो फिर आपको क्या चाहिए ?"

उसने उत्तर दिया, " मुझे कोई ठिकाना चाहिए। मैं ऐसा स्थान चाहता हूं, जहां मैं शान्ति से विश्राम कर सकूं।"

मैंने जोर देकर कहा, "तो लीजिए यह दो रुपए। किसी सराय में जाकर विश्राम कर लेना।"

दुःख के साथ उसने कहा, "मैंने हर एक सराय में कोशिश कर ली, पर सब व्यर्थ। मैंने हर एक घर का द्वार खटखटाया, पर किसीने ठिकाना न दिया। मैं प्रत्येक भोजनालय में गया, पर किसीने रोटी न दी। मुझे चोट पहुंची है, मैं भूखा नहीं हूं। मैं

थका नहीं, निराश हूं। मुझे विश्राम के लिए घर नहीं चाहिए, मानव-हृदय में स्थान चाहिए।"

मैंने अपने मन में कहा, यह कितना विचित्र मनुष्य है! कभी तो यह एक दार्शनिक के समान बातें करता है और कभी एक पागल जैसी। ज्योंही मेरे मन में ऐसे विचार पैदा हुए, उसने मेरी तरफ घूरकर देखा और दुःखभरी आवाज में कहने लगा, "हां! मैं पागल हूं। पर एक पागल भी बिना किसी ठिकाने अपने को अजनबी और बिना भोजन के अपने को भूखा अनुभव करेगा, क्योंकि मनुष्य का हृदय प्रेम, दया और करुणा के भावों से खाली है।"

मैंने क्षमा मांगते हुए उससे कहा, "मुझे अपने अज्ञानपूर्ण विचारों के लिए खेद है। क्या आप मेरा आतिथ्य स्वीकार करेंगे और मेरे घर में विश्राम करेंगे ?"

उसने कठोरता से कहा, "मैंने हजार बार तुम्हारा द्वार और दूसरों के द्वार खटखटाए पर किसीने सुनावाही न की।"

अब मुझे विश्वास हो गया कि वह सचमुच पागल है। फिर भी मैंने कहा, "खैर, अब तो आप मेरे घर चलें।"

उसने धीरे से अपना सिर उठाते हुए कहा, "यदि तुम यह जानते कि मैं कौन हूं, तो मुझे कभी निमंत्रण न देते।"

डरते हुए मैंने धीरे से पूछा, "आप कौन हैं ?"

समुद्र की गड़गड़ाहट के समान मर्मभेदी स्वर में उसने गरज-कर कहा, "मैं वह क्रांति हूं, जो कि जातियों की नाश की हुई चीजों को फिर से निर्माण करती है! मैं वह तूफान हूं, जो युगों

के पैदा किए हुए वृक्षों को जड़ से उखाड़ फेंकता है। मैं वह हूं, जो धरती पर शांति स्थापना के लिए नहीं वरन युद्ध फैलाने के लिए आया है, क्योंकि इन्सान को दुःख और कष्ट में ही संतोष होता है।"

यह कहते हुए आंसू उसके कपोलों पर से बह पड़े। फिर वह तनकर खड़ा हो गया और उसके आसपास ज्योति-सी फैल गई। उसने अपने हाथ आगे को फैला दिए और मैंने उसकी हथेलियों पर कीलों के निशान देखे। मैं मुस्कराता हुआ उसके चरणों में साष्टांग लेट गया और चिल्लाकर कहा, "प्रभु ईसामसीह !"

बड़ी मानसिक वेदना के साथ उसने कहा, "जनता मेरे सम्मान में मेरे नाम पर उत्सव मना रही है। वह उन रिवाजों को पाल रही है, जो युगों ने मेरे नाम के इर्दगिर्द कायम कर दिए हैं। पर मैं अजनबी हूं और इस संसार में पूर्व से पश्चिम तक मारा-मारा फिरता हूं, फिर भी कोई मेरे असली रूप को नहीं पहचानता। लोमड़ियों के लिए भट हैं और आकाश में उड़नेवाले पक्षियों के लिए उनके घोंसले हैं, पर आदम की संतान को अपना सिर छुपाने के लिए कोई जगह नहीं।"

उसी क्षण मैंने अपनी आंखें खोलीं और सिर उठाकर जो अपने आसपास देखा, तो मुझे अपने सामने धूएं के बादलों के सिवा कुछ दिखाई न दिया और न अनंतता की गहराइयों से निकलती हुई रात की खामोशियों की सायं-सायं की आवाज के अतिरिक्त और कुछ सुनाई दिया। मैंने अपने आपको सम्भाला

श्रौर दूरस्थ लोगों के गीत सुने। उस समय मेरी अन्तरात्मा ने कहा, "जो शक्ति हृदय को चोट से बचाती है, वही शक्ति हृदय को बडप्पन की खुशी से फूलकर कुप्पा होने से रोकती है। वाणी का गीत मधुर है, पर हृदय का गीत स्वर्ग का पवित्र स्वर है।"

४. जातियों के सिद्धान्त

जाति उन भिन्न-भिन्न आचरण, विश्वास और मतवाले व्यक्तियों का समुदाय है, जिन्हें एक वास्तविक सम्बन्ध आपस में मिलाता है। यह वास्तविक सम्बन्ध आचरण से अधिक दृढ़, विश्वास से अधिक गहरा और मत से ज्यादा मान्य है।

कभी धर्म की एकता इस सम्बन्ध का एक तार होती है, पर यह तार इतना पक्का नहीं होता कि दूसरे जातीय सम्बन्धों को शिथिल और ढीला कर दे। हां, यदि वह सम्बन्ध ही ऐसे गले हुए और दुर्बल हों तो दूसरी बात है, जैसे कि कुछ पूर्वी देशों में हैं।

कभी भाषा की एकता इस सम्बन्ध का मूल कारण होती है। पर बहुत-सी जातियां हैं, जो एक भाषा बोलती हैं, पर राज-नीति, राजशासन और सामूहिक दृष्टिकोण आदि में उनमें स्थायी विरोध होता है।

कभी खून की एकता इस सम्बन्ध की नींव होती है, पर इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण मौजूद हैं, जिनसे हम यह प्रमाणित कर सकते हैं कि भिन्न-भिन्न वंश की जातियां एक

दूसरे से अलग हुईं और यह अलगाव आपसी शत्रुता, लड़ाई-झगड़ों और अन्त में अवनति और नाश का कारण बन गया।

और कभी लौकिक भलाई की इच्छा वह आधार होती है, जिसपर यह सम्बन्ध खड़ा किया जाता है। पर बहुत-से समुदाय हैं, जिनकी लौकिक भलाई की युक्ति सिवा स्वार्थों और युद्धों के कुछ नहीं होती।

अच्छा! तो फिर यह जातीय सम्बन्ध क्या है? और वह कौन-सी धरती है, जहां जातियों की मूर्तियां बनती हैं?

जातीय सम्बन्ध के बारे में मेरा एक मत है, जिसे कुछ विचारक इसलिए विचित्र समझते हैं कि इसके सिद्धान्त और परिणाम अनुभव में आनेवाली बातों से तालमेल नहीं खाते।

फिर भी मेरा यह मत है—

हर उपजाति का एक सामूहिक गुण होता है जो अपने तत्व और रुचि की दृष्टि से व्यक्ति के गुण से समानता रखता है। यह सामूहिक गुण अपने अस्तित्व के लिए जातियों के व्यक्तियों की इस तरह आवश्यकता रखता है, जैसे वृक्ष को अपने जीवन के लिए पानी, मिट्टी, प्रकाश और गरमी की आवश्यकता है। फिर भी वह उपजातियों से अलग अपना एक स्थायी अस्तित्व रखता है और इसका एक विशेष जीवन और एक अलग विचार होता है। परन्तु जिस प्रकार मेरे लिए उस युग का निश्चित करना कठिन है जिसमें व्यक्ति का गुण पैदा होता है, उसी तरह मेरे लिए उस युग का निश्चित करना भी कठिन है, जिसमें सामूहिक गुण पैदा होता है। फिर भी मैं यह जरूर

जानता हूं; उदाहरण के लिए, मिस्री कौम नील नदी के किनारे पर आरम्भिक राज की नींव रखे जाने से कम से कम पांच सौ वर्ष पहले प्रकट हुई और इसी सामूहिक गुण से मिस्र ने अपने कला-सम्बन्धी, धार्मिक और सामूहिक विकासों में सहायता ली।

जो कुछ मैंने मिस्र के सम्बन्ध में कहा, वही अशूर, ईरान, रोम और अरब आदि की नई जातियों पर भी लागू होता है। नवीन जातियों से मेरा अभिप्राय उन जातियों से है, जो मध्य-काल के बाद अस्तित्व में आईं।

मैंने कहा है और ठीक कहा है कि सामूहिक गुण एक विशेष जीवन होता है। जिस प्रकार हर जीवित प्राणी की एक सीमित आयु होती है, उसी प्रकार सामूहिक गुण के लिए भी एक समय होता है, जिससे वह बढ़ नहीं सकता। जिस तरह व्यक्तिगत अस्तित्व बचपन से जवानी, जवानी से अधेड़पन और अधेड़पन से बुढ़ापे की अवस्था में जाता है, इसी तरह सामूहिक गुण का अस्तित्व भी नींद के परदे से घबराए हुए प्रभात के जागरण से, सूरज की किरणों से प्रकाशमान दुपहर के जागरण से, व्याकुलता के वस्त्र पहने सायंकाल की व्याकुलता से, नींद के बोझ से दबी हुई रात के जागरण से, गहरी नींद की गहराइयों की तरफ जाता है।

यूनानी जाति ईसामसीह के जन्म से एक हजार वर्ष पहले जागी और मसीह से पांच सौ वर्ष पहले महानता और उन्नति को प्राप्त हुई। पर जब मसीह का युग आया, तो जाग्रति के स्वप्नों से उकता गई और अनन्त के स्वप्नों से गले मिलने

के लिए अनंतता के बिस्तर में सो गई।

अरबी जाति इस्लाम धर्म के प्रकट होने से तीन सौ वर्ष पहले अस्तित्व में आई और दूसरे युग में उसे अपने व्यक्तिगत अस्तित्व की अनुभूति हुई, यहां तक कि जब इस्लाम के पैगम्बर पैदा हुए, तो अरबी जाति एक देव की तरह खड़ी हुई और आंधी की तरह उस प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर दिया, जो उसके रास्ते में रुकावट बनकर खड़ी हुई। और जब खलीफाओं का युग आया, तो वह एक ऐसी गद्दी पर बैठ गई, जिसका एक पाया हिन्दुस्तान में था तो दूसरा इन्दलस में। पर जब उसकी उन्नति का सूर्य डूबने को आया और मुगल जाति पैदा होकर पूर्व से पश्चिम तक फैल गई, तो अरबी जाति अपने जागरण से तंग आकर सो गई। पर उसकी नींद गहरी नींद नहीं, हलकी और उचटती हुई नींद है। इसलिए मैं विश्वास के साथ कहता हूं कि वह दुबारा ठीक इसी प्रकार जागेगी और उन सब शक्तियों का प्रदर्शन करेगी, जो उसके अंतरंग में छुपी रह गई हैं, जैसे रोमन जाति इटली के जागरण-काल में (Renaissance) आन्दोलन के युग में दुबारा जाग्रत हुई और वीनस, फ्लोरेंस और मीलान नगरों में उन बातों तथा कार्यों को पूरा किया, जिनको उसने तूतौनी जाति के आक्रमण से पहले प्रारम्भ कर दिया था।

इतिहास में जितनी जातियां मिलती हैं, उन सबसे अधिक विचित्र जाति फ्रांसीसियों की है, जिसको अस्तित्व में आए दो हजार वर्ष हो गए, पर वह अभी तक जवानी के चित्ताकर्षक युग में है। इस जाति में आज भी विचारों की कोमलता, दृष्टि में

तेजी, और विद्याओं और कलाओं की विस्तीर्णता पाई जाती है, जो इसके इतिहास के प्रत्येक युग में इसकी परिपूर्णता की पूंजी रही है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि इन विशेष गुणों में इस जाति ने खूब उन्नति की है और बराबर कर रही है।

ह्यूगो, रेनां, रासंद और सेमूनी और इनके अतिरिक्त उन्नीसवीं शताब्दी के तमाम फ्रांसीसी महापुरुष कला, ज्ञान और विचार की दृष्टि से संसार के हर महापुरुष के समान श्रेष्ठता रखते हैं।

हमें एक और बात यहां प्रमाणित करनी है कि कुछ जातियों की आयु दूसरी जातियों की आयु की अपेक्षा अधिक लम्बी होती है। मिस्री जाति तीन हजार वर्ष तक जिन्दा रही, पर यूनानी जाति एक हजार वर्ष से ज्यादा जिन्दा न रह सकी। जातियों की आयु के कम या ज्यादा होने के कारण भी वेही हैं, जो व्यक्तियों की आयु के कम या ज्यादा होने के हैं।

पर जीवन के रंगमंच पर अपना अभिनय पूरा कर लेने के बाद जाति पर क्या बीतती है ?

क्या वह आनेवाली संतानों के लिए अपनी याद के सिवा कुछ और छोड़े बिना मर जाती है ? क्या वह जमाने के हाथों इस प्रकार नष्ट हो जाती है कि मानो वह कभी थी ही नहीं ?

मेरा विश्वास है कि किसी जाति का वास्तविक अस्तित्व बदल सकता है, पर नष्ट कभी नहीं होता। वह जड़ पदार्थों के अस्तित्व की तरह एक रूप से दूसरा रूप धारण कर लेता है, पर उसके प्राकृतिक अणु जमाने के साथ बाकी रहते हैं। इसी प्रकार किसी जाति का सामूहिक गुण सोता तो अवश्य

है, पर फूलों के समान धरती में अपने बीज डालकर। रही इसकी आत्मा, सो वह अनन्त लोक की तरफ ऊंचे उठती है। और मेरी राय में जाति हो या फूल, इसकी आत्मा—सुगंध—ही अकेला यथार्थ तत्व है, स्थायी गुण है। इसलिए शेब, बाबल, एथेन्स और बगदाद की आत्मा हमारी भूमि के गिर्द तने हुए ईथर के परदे में अब तक मौजूद है, बल्कि वह हमारी आत्माओं की गहराइयों में मौजूद है और हम व्यक्तिगत और सामूहिक अपेक्षा से उस हर एक जाति की बपौती हैं, जो इस धरतीतल पर प्रकट हो चुकी हैं। पर यह पवित्र बपौती उस समय तक व्यक्तिगत या सामूहिक कोई प्रत्यक्ष रूप धारण नहीं कर सकती, जब तक कोई ऐसी जाति अस्तित्व में न आए, जो तमाम व्यक्तियों और सब वर्गों को अपने भीतर संभाले और इस तरह एक सर्वव्यापी गुण ऐसा सामूहिक रूप धारण कर ले, जिसका विशेष जीवन और अलग उद्देश्य हो।